



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 183]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 6, 2005/आषाढ़ 15, 1927

No. 183]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 6, 2005/ASADHA 15, 1927

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 जुलाई, 2005

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित कतिपय रबड़ रसायनों (एमबीटी, एमबीटीएस और सीबीएस) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच।

सं. 14/9/2004-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण) नियमावली, 1995(जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

2. जबकि मै0 नैशनल आर्गेनिक केमिकल इंडस्ट्रीज लि0 (जिसे इसके बाद एनओसीआईएल अथवा याचिकाकर्ता कहा गया है) ने उपर्युक्त अधिनियम तथा नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक प्रार्थना-पत्र दर्ज कराया है जिसमें चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित कतिपय रबड़ रसायनों नामतः एमबीटी, एमबीटीएस और सीबीएस के तथाकथित पाटन का आरोप लगाया गया है और अनुरोध किया गया है कि संबद्ध माल पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के संबंध में जांच-प्रारंभ की जाए ।

और जबकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से याचिकाकर्ता -मै0 नैशनल आर्गेनिक केमिकल्स लि0 द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 7 जुलाई, 2004 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसके

अनुसार उक्त नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार, संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच आरंभ की गई जिससे तथाकथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा तथा इसके प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की राशि, यदि उगाही जाए तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने हेतु पर्याप्त रहेगी, की सिफारिश की जा सके ।

क. प्रक्रिया

3. प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त जांच-प्रारंभ के बारे में अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी किए जाने के बाद इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है:
 - i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियम 5(5) के अनुसार चीन जनवादी गणराज्य सरकार को अधिसूचित किया और भारत में स्थित चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, उपलब्ध जानकारी के अनुसार आयातकों तथा घरेलू उद्योग को दिनांक 7 जुलाई, 2004 की जांच-प्रारंभ अधिसूचनाओं की प्रतिलिपियां भेजीं और उनसे अनुरोध किया कि वे जांच-प्रारंभ संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर प्रश्नावली का प्रत्युत्तर भेज दें और अपने-अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत कर दें ।
 - ii) घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका के अगोपनीय अंश की प्रतियां उपरोक्त नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को उपलब्ध करायी गयी ।
 - iii) संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच-प्रारंभ के बारे में सूचित किया गया और अनुरोध किया गया कि वे अपने देश/क्षेत्र के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें कि वे निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दे दें । निर्यातक को भेजे गए पत्र, याचिका तथा प्रश्नावली की एक-एक प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ-साथ संबद्ध देश के दूतावास को भी भेजी गई ।
 - iv) प्राधिकारी ने संगत जानकारी मंगाने हेतु संबद्ध देश/क्षेत्र के ज्ञात निर्यातकों को नियम 6(4) के अनुसार, प्रश्नावली भेजी:-

- v) उपरोक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में चीन जन.गण. के निम्नलिखित निर्यातकों ने गैर-बाजार अर्थव्यव संबंधी प्रश्नावली के साथ-साथ अपना-अपना प्रश्नावली-उत्तर दर्ज कराया:-
- क) मै0 नानजिंग केमिकल फैक्ट्री, चीन जन.गण (सीबीएस)
 - ख) मै0 शांडोंग शांक्सियान केमिकल कं0 लि0, चीन जन.गण (एमबीटी, एमबीटीएस, सीबीएस और पीवीआई)
 - ग) मै0 शांक्सियान यांग्यु लि0 (पीवीआई)
- vi) प्रश्नावली प्रत्युत्तर में संज्ञान में आई प्रारंभिक त्रुटियों और एनएमई प्रत्युत्तर पक्षकारों को सूचित किए गए । निर्यातकों द्वारा दर्ज संशोधित प्रत्युत्तरों तथा स्पष्टीकरणों को रिकॉर्ड में शामिल किया गया ।
- vii) भारत में संबद्ध माल के ज्ञात आयातकों तथा उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई जिसमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक जानकारी मंगाई गई । जबकि मै0 एमआरएफ लि0 तथा मै0 बिरला टायर्स लि0 ने गोपनीय आधार पर अपने-अपने आयातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर दर्ज कराए लेकिन ऑटोमोटिव टायर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए), ऑल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन तथा ऑल इंडिया फंडरेशन ऑफ रबड़ फुटवियर मैनुफैक्चरर्स ने जांच के दौरान केवल अपने-अपने कानूनी तर्क ही दर्ज कराए ।
- viii) निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों सहित सभी इच्छुक पक्षकारों के विचार, जहां तक संगत हों, रिकॉर्ड में शामिल कर दिए गए हैं और प्राधिकारी द्वारा यथोचित स्थानों पर उनकी जांच की गई लेकिन अलग-अलग इच्छुक पक्षकारों की टिप्पणियों को ज्यों का त्यों उद्धृत नहीं किया गया ।
- ix) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से अनुरोध किया गया कि वे जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध माल के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराएं ।

- x) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और उसे इच्छुक पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- xi) प्राधिकारी ने प्रस्तुत घरेलू उद्योग के आंकड़ों तथा क्षति संबंधी जानकारी का सत्यापन किया और सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में संबद्ध माल की अनुकूल उत्पादन-लागत, और विनिर्माण एवं बिक्री-लागत की गणना की जिससे यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने हेतु पर्याप्त रहेगा ।
- xii) प्राधिकारी ने निर्यातकों के प्रत्युत्तरों की यथासंभव मौके पर जांच तथा सत्यापन किया ताकि निर्यातक देश के सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण किया जा सके ।
- xiii) घरेलू उद्योग ने अपने दिनांक 16 मई, 2005 के पत्र द्वारा एक विचाराधीन उत्पाद अर्थात् पीवीआई पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने संबंधी अपना प्रार्थना-पत्र वापस ले लिया । प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के नियम 14 (क) के अनुसार जांच समाप्त कर दी क्योंकि इसमें केवल पीवीआई नामक उत्पाद कवर किया गया था और अन्य तीन उत्पादों नामतः एमबीटी, एमबीटीएस तथा सीबीएस (जिन्हें इसके बाद संबद्ध माल कहा गया है) के संबंध में जांच जारी रखी । प्राधिकारी नोट करता है कि मैसर्स शांक्सियान यांग्यु लि० ने केवल पीवीआई जांच के संबंध में अपना प्रश्नावली प्रत्युत्तर दर्ज कराया जिस पर जांच समाप्त कर दी गई । अतः इस निर्यातक द्वारा किए गए निवेदनों को इस कार्रवाई के रिकॉर्ड से हटा दिया गया है ।
- xiv) प्राधिकारी ने सभी इच्छुक पक्षकारों को दिनांक 15 जून, 2005 को प्रकटन विवरण-पत्र जारी किया जिसमें उसके समक्ष प्रस्तुत आवश्यक तथ्यों को सूचित किया गया जो प्राधिकारी के जांच परिणामों का आधार बन गया । इच्छुक पक्षकारों की टिप्पणियों की, जहां तक वह संगत हों, प्राधिकारी द्वारा इस जांच-परिणाम में जांच की गई है ।
- xv) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों के गोपनीयता दावों की जांच की है जो उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में है । ऐसी जानकारी जो स्वभाव से गोपनीय हो

अथवा जो इच्छुक पक्षकारों द्वारा अगोपनीय सारांश सहित गोपनीय आधार पर प्रदान की गई है, को गोपनीय माना गया है। इस अधिसूचना में **** पर व्यक्त जानकारी याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी को व्यक्त करती है और प्राधिकारी द्वारा उक्त नियमावली के तहत उसी पर विचार किया गया है।

xvi) जांच दिनांक 1 जनवरी, 2003 से 31 दिसंबर, 2003 तक की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई।

ख. विचाराधीन उत्पाद

4. विचाराधीन उत्पाद ऐसे कतिपय खड़ रसायन हैं जिनका प्रयोग खड़ उत्पादों नामतः एक्सेलेरेटर्स एमबीटी, एमबीटीएस और सीबीएस के विनिर्माण में होता है।

इन उत्पादों के विस्तृत रसायन नाम निम्नानुसार हैं-

जेनेरिक नाम	रसायन विवरण	अन्य व्यापारिक नाम
एमबीटी	2-मैरसेप्टो बेंजोथियाजोल	एक्सिलिरेटर एम,
एमबीटीएस	डाइबेंजोथियाजोल डिसल्फाइड	एक्सिलिरेटर डीएम
सीबीएस	एन-साइक्लोहेक्सिल-2-बेंजोथियाजोल सल्फेनामाइड	एक्सिलिरेटर सीजेड/ एक्सिलिरेटर एचबीएस

1. एमबीटी - एमबीटी का उत्पादन एनीलीन, कार्बन डाइसल्फाइड तथा सल्फर को रिएक्शन के दौरान बनाए गए हाइड्रोजन सल्फाइड के उच्च ताप तथा प्रेशर के तहत रिएक्शन द्वारा किया जाता है।
2. एमबीटीएस - एमबीटीएस का विनिर्माण उपयुक्त आक्सीडाइजिंग एजेंटों के प्रयोग द्वारा एमबीटी के सोडियम साल्ट के आक्सीडेशन द्वारा किया जाता है।
3. सीबीएस - सीबीएस का विनिर्माण उपयुक्त आक्सीडाइजिंग एजेंटों के प्रयोग द्वारा एमबीटी के सोडियम साल्ट, साइक्लोहेक्सिल/एमाइन के रिएक्शन द्वारा किया जाता है।

5. इन उत्पादों का प्रमुख प्रयोग अन्य के साथ-साथ ऑटोमोटिव टॉयर तथा ट्यूब उद्योग और कन्वेयर बेल्टिंग तथा फुटवियर उद्योग में किया जाता है। विभिन्न अन्य प्रयोगों में प्रयुक्त अन्य रबड़ रसायनों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में कवर नहीं किया गया है।

ख.1 वर्गीकरण

6. प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध माल के लिए कोई समर्पित आईटीसी एचएस वर्गीकरण नहीं है और विचाराधीन उत्पादों को सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम तथा आईटीसी एचएस वर्गीकरण के विभिन्न सीमा-शुल्क वर्गीकरण उप-शीर्षों के शीर्षों 38.12.10, 38.12.20 तथा 38.12.30 के तहत वर्गीकृत किया गया है। किंतु, सीमा शुल्क तथा आईटीसी एचएस वर्गीकरण केवल संकेतात्मक मात्र हैं और मौजूदा जांच के दायरे में उनकी कोई बाध्यता नहीं है।

ख.2 निर्यातकों, आयातकों और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

7. इच्छुक पक्षकारों ने, जिनमें चीन के प्रत्युत्तरदाता निर्यातक तथा ऑटोमोटिव टॉयर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन शामिल हैं, ने तर्क दिया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को चार विशेष तथा अलग-अलग रबड़ रसायनों अर्थात् एमबीटी, एमबीटीएस, सीबीएस तथा पीवीआई को एक एकल जांच में कवर करते हुए एक संयुक्त जांच आरंभ नहीं करनी चाहिए थी। उन्होंने तर्क दिया है कि प्राधिकारी को चाहिए था कि वह इन चारों रबड़ रसायनों को अलग-अलग मान लेते क्योंकि इनमें से प्रत्येक उत्पाद के संबंध में बाजार, निर्यातक, आयातक, उत्पादक तथा प्रयोक्ता अलग-अलग हो सकते हैं। अतः इन सबको एक साथ लेते हुए भारत में अनेक पक्षकारों से सार्थक सहयोग नहीं मिल सकेगा क्योंकि वे तथ्यों को तोड़-मरोड़ सकेंगे। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि यह संभव नहीं है कि संबंधित टैरिफ शीर्ष द्वारा कवर किए गए प्रत्येक रसायन के संबंध में आयात आंकड़ों को अलग-अलग किए बिना क्षति अथवा मात्रा/कीमत के संबंध में कोई निर्धारण किया जा सकेगा। उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि चारों रबड़ रसायन चार अलग-अलग उत्पाद हैं जो परस्पर प्रतिस्थापनीय नहीं होते हैं। अतः यह माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के ऊपर निर्भर है कि वह इस संबंध चार अलग-अलग जांच प्रारंभ करें ताकि पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध का विश्लेषण किसी सार्थक तरीके से किया जा सके।

8. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि संबद्ध माल का मौटे तौर पर प्रयोग रबड़ तथा रबड़ मिश्रणों के परिष्करण में किया जाता है और इसके उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के संबंध में एक बड़ी समानता होती है। अतः, विचाराधीन उत्पादों के संबंध में संपूर्ण विश्लेषण अलग-अलग होने तक सभी उत्पादों की अलग-अलग जांच करने की बजाय एक सामान्य जांच यथोचित रहती। उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि पिछले कई उदाहरण ऐसे भी हैं जिनमें प्राधिकारी ने एकल जांच के अनेक उत्पादों की जांच की है।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

9. प्राधिकारी नोट करता है कि न तो उक्त करार न ही पाटनरोधी नियमावली में एक जांच में बहु-उत्पादों की जांच किए जाने की किसी भी प्रकार से मनाही है। जहां तक अलग-अलग घरेलू उत्पादों तथा अलग-अलग निर्यात उत्पादों के समान उत्पाद होने की बात है और क्षति निर्धारण, अलग-अलग उत्पादों के संबंध में किया जा सकता हो, किसी जांच को किसी एकल उत्पाद तक ही सीमित रखने की कोई विशेष बाध्यता नहीं है, जैसाकि इच्छुक पक्षकारों द्वारा तर्क दिया गया है।
10. प्राधिकारी आगे यह भी नोट करता है कि मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद तीन अलग-अलग हैं फिर भी वे रबड़ रसायनों की सामान्य श्रेणी में आते हैं जिनका प्रयोग ऐक्सिलेरेटर रबड़ रसायन के रूप में किया जाता है जिनका प्रयोग रबड़ उद्योग में किया जाता है। इन रबड़ रसायनों के लिए घरेलू उद्योग वही है जो एक समान विनिर्माण सुविधाओं के तहत इन रसायनों का विनिर्माण करता है। अतः, ऐसी स्थिति में एक संयुक्त जांच प्रारंभ करना सर्वाधिक उचित माना गया है ताकि ऐसी जांच के संबंध में संसाधनों का अनुकूल उपयोग किया जा सके।
11. प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि जांच प्रारंभ अधिसूचना में यह पर्याप्त स्पष्टीकरण है कि पाटन तथा क्षति दोनों ही जांच समग्र रूप से घरेलू उद्योग पर समग्र प्रभाव संबंधी जांच के अलावा अलग-अलग उत्पादों के संबंध में जांच की जानी है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि घरेलू उद्योग की स्थिति संबंधी अपेक्षा की अलग-अलग उत्पादों के संबंध में भी जांच की गई है। अतः, इस संबंध में इच्छुक पक्षकारों के तर्क वैध प्रतीत नहीं होते हैं।

ग. समान वस्तुएं

12. आवेदक ने दावा किया है कि आवेदन-पत्र में शामिल अलग-अलग उत्पाद एक एकल उत्पाद है और वह किसी अन्य रबड़ रसायनों से परस्पर प्रतिस्थापनीय नहीं है। ये ऐसे विशिष्ट रसायन हैं जिनका प्रयोग अलग-अलग किस्म के रबड़ उत्पादों के विनिर्माण में किया जाता है और वह अन्य रसायनों के लिए प्रतिस्थापनीय नहीं होते हैं हालांकि उन्हें सामान्य रूप से एक्सिलेरेटर्स तथा निरोधकों के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, मौजूदा आवेदन-पत्र में शामिल रबड़ रसायन परस्पर प्रतिस्थापनीय भी नहीं होते हैं अथवा वे परस्पर समान उत्पाद नहीं हैं क्योंकि इन सामग्रियों का प्रयोग किसी विशेष अंतिम अनुप्रयोगों के लिए नहीं किया जाता है। अतः, घरेलू उद्योग के होने वाली क्षति सहित पाटन मार्जिन तथा अन्य विश्लेषण अलग-अलग उत्पादों के संबंध में किया जाएगा।
13. इन अलग-अलग उत्पादों को उनके रसायन नाम तथा व्यापार नामों से पूरे विश्व में जाना जाता है और इनके द्वारा विनिर्मित उत्पादों तथा आयात उत्पादों के बीच कोई अंतर नहीं होता है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पादों तथा संबद्ध देश से आयातित उत्पादों के बीच कोई अंतर नहीं है। टायर उद्योग तथा व्यापारियों द्वारा इन उत्पादों का प्रत्यक्ष आयात अन्य उद्योगों को सप्लाई के लिए किया जाता है। उपभोक्ता घरेलू तथा तदनुसूची आयात उत्पादों का प्रयोग परस्पर कर रहे हैं।
14. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से आयातित उत्पाद सभी आवश्यक विशेषताओं में समान हैं अतः वे उक्त नियमावली के अनुसार उनके आशय के भीतर समान उत्पाद हैं।

घ. घरेलू उद्योग

घ.1 निर्यातकों, आयातकों और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

15. इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की स्थिति की जांच अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा किए जा रहे उत्पादन की तुलना में की जानी चाहिए थी। उन्होंने तर्क दिया है कि अपने नाम पर आयात करने वाले उत्पादकों अथवा घरेलू उद्योग के दायरे से आयातकों से संबंधित उत्पादकों को प्राधिकारी शामिल नहीं कर सकता तथा नहीं कर सकेगा। अतः प्राधिकारी को सबसे पहले यह निर्णय अवश्य करना

चाहिए कि वह ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल करेगा अथवा नहीं करेगा जो आयातक भी हों। ऐसा तभी हो सकेगा जब घरेलू उद्योग की एनओसीआईएल की स्थिति का निर्धारण हो जाए। उन्होंने घरेलू उद्योग के उस वक्तव्य पर भी प्रश्न उठाया है कि संबद्ध माल के अन्य उत्पादकों ने इन उत्पादों का उत्पादन या तो बंद कर दिया है अथवा उन्होंने अपना व्यापार बदल दिया है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि इन उत्पादकों ने संबद्ध माल के उत्पादन से अपने आप को पर्याप्त रूप से अलग कर दिया है और अब उन्होंने आयातों का सहाय लिया है।

16. एटीएमए तथा चीन के प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों ने अपने प्रकटन-पश्चात निवेदनों में घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में अपने-अपने विचार दोहराए हैं और तर्क दिया है कि चूंकि एमबीटी का संपूर्ण उत्पादन उसके सहायक एकक से लिया गया है, जिसका अलग कानूनी अस्तित्व है, अतः आवेदक को संबद्ध माल का उत्पादक नहीं माना जा सकता है। अतः इसे भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है।

घ.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

17. जांच के लिए आवेदन मै0 एनओसीआईएल, मुंबई द्वारा दिया गया है। इन विचाराधीन उत्पादों के कुछ अन्य विनिर्माता मै0 बॉयर इंडिया लि0, मै0 आईसीआई लि0 और मै0 मर्सकेम लि0 हैं। किंतु, घरेलू उद्योग द्वारा तर्क दिया गया है कि या तो उन्होंने पाटित आयातों की वजह से संबद्ध माल का उत्पादन करना बंद कर दिया है और उन्होंने स्वयं को संबद्ध माल के आयातक के रूप में बदल दिया है अथवा उन्होंने अपना-अपना उत्पादन काफी कम कर दिया है। प्राधिकारी द्वारा इन तीनों कंपनियों से कहा गया कि वे संबद्ध माल के संबंध में अपनी-अपनी क्षमता, उत्पादन, बिक्री तथा आयातों संबंधी आवश्यक जानकारी प्रदान करें और उपरोक्त आवेदन-पत्र के समर्थन अथवा विरोध की पुष्टि करें। यद्यपि, मै0 आईसीआईसीआई, जिन्होंने जांच का विरोध किया है, को छोड़कर इन उत्पादकों में से किसी से भी प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ।
18. किंतु, डीजीसीआईएंडएस तथा अन्य स्रोतों द्वारा प्रस्तुत सौदेवार आयात आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आईसीआई तथा अन्य दो कंपनियों ने जांच अवधि के दौरान इन उत्पादों का काफी आयात किया है। जहां तक बॉयर इंडिया का संबंध है, यह कंपनी मै0 बॉयर जीएमबीएच से संबंधित है जोकि विभिन्न स्थानों पर स्थित अपनी

विनिर्माण सुविधाओं से भारत को संबद्ध माल का एक प्रमुख उत्पादक तथा निर्यातक है। किंतु, जांच से पहले उनसे जानकारी तथा उक्त आवेदन-पत्र के समर्थन अथवा विरोध में प्रत्युत्तर मांगते हुए प्राधिकारी के एक विशेष अनुरोध पर आईसीआईसीआई को छोड़कर इन उत्पादकों से कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ। अतः प्राधिकारी ने निष्कर्ष दिया कि किसी अन्य घरेलू उत्पादक से इस जांच के संबंध में कोई अर्थक्षम विरोध नहीं हुआ है और उनके आयातक स्थिति को देखते हुए ये घरेलू विनिर्माता उक्त करार के अनुच्छेद 4.1(i) के अनुसार घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल करने हेतु अर्हता प्राप्त नहीं करते हैं।

19. जहां तक इस उत्पाद (एमबीटी) के आउटसोर्सिंग का संबंध है, प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक एक चरण में जॉब वर्क आधार पर अपने सहायक एकक से एक चरणीय प्रसंस्करण करवाता है जिसके लिए आवेदक द्वारा पिछली चरण-सामग्री एनएएमबीटी की सप्लाई की जाती है। जॉब वर्कर को प्रसंस्करण शुल्क का भुगतान किया जाता है जिसमें उसकी लागत, मूल्य ह्रास तथा लाभ शामिल होता है। यह भी नोट किया जाता है कि सहायक एकक की संपूर्ण क्षमता, जिससे आवेदक जॉब वर्क आधार पर एनबीटी प्रसंस्करण करवाता है, वह पूर्णतया एनओसीआईएल को समर्पित है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि दीर्घावधि प्रसंस्करण करार आधार पर जॉब वर्किंग की पद्धति विश्व-भर में प्रसंस्करण उद्योग में असामान्य बात नहीं है। इस पद्धति का अनुसरण पश्चिमी देशों के फ्लेक्सीज जैसे बड़े रबड़ रसायन उत्पादकों द्वारा किया जाता है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि नियम 2(ख) के तहत घरेलू उद्योग की परिभाषा में "समान वस्तु का विनिर्माता" तथा "उससे संबंधित कोई भी क्रियाकलाप" शामिल होता है। अतः प्राधिकारी का विचार है कि आवेदक द्वारा अपने मध्यवर्ती उत्पाद के अंतिम चरण तक आंशिक प्रसंस्करण की प्रक्रिया से उसे घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए अयोग्य नहीं ठहराया जाएगा।
20. एटीएमए तथा चीन के प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी को चाहिए था कि वह क्षति संबंधी जांच के प्रयोजनार्थ अन्य घरेलू उत्पादकों से जानकारी का संग्रहण करता। उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि अन्य घरेलू उत्पादकों से किए गए सभी पत्र-व्यवहार को भी सार्वजनिक फोल्डर में रखा जाए। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करता है कि जांच-प्रारंभ किए जाने से पहले आवेदक की स्थिति का पता लगाने के लिए एक विस्तृत कार्रवाई की गई है और इसका खुलासा इच्छुक पक्षकारों को कर दिया गया है। चूंकि आईसीआई द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई संक्षिप्त जानकारी को छोड़कर अन्य घरेलू उत्पादकों ने सहयोग

नहीं किया अतः प्राधिकारी के पास सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के साथ कार्रवाई करने के सिवाय कोई अन्य विकल्प नहीं रह गया था। जहां तक प्राधिकारी के पत्र-व्यवहार को सार्वजनिक फोल्डर में रखे जाने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करता है कि नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी पर केवल यह दायित्व है कि वह एक इच्छुक पक्षकार द्वारा उन अन्य इच्छुक पक्षकारों को उसे दिए गए साक्ष्य को उपलब्ध कराया जाए जो नियम 7 के तहत गोपनीयता अपेक्षाओं के अध्यक्षीन जांच में सहभागिता कर रहे हैं।

21. आवेदक आर्गेनिक रसायनों का एक बहु-उत्पाद विनिर्माता है। प्राधिकारी नोट करता है कि विचाराधीन अलग-अलग उत्पादों के संबंध में याचिकाकर्ता की संयंत्र क्षमता समर्पित हैं। याचिकाकर्ता कंपनी के अलग-अलग रसायनों के उत्पादन पर विचार करते हुए और ऐसे उत्पादकों के उत्पादन की अनुमति नहीं देते हुए जिन्होंने संबंधित उत्पादों का पर्याप्त आयात किया है, विचाराधीन उत्पाद का कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा आवेदक कंपनी के हाथ में है। उपरोक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह निर्णय देता है कि यह आवेदक घरेलू उद्योग की स्थिति कायम रखता है और उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए वह अपेक्षित मानदंड पूरा करता है जैसाकि पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(क) तथा (ख) और नियम 2 (ख) के तहत अपेक्षित है।

ड. न्यूनतम से अधिक सीमाएं

22. प्राधिकारी द्वारा वाणिज्यिक आसूचना तथा सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) और अन्य गौण स्रोतों से प्राप्त आयात आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से अलग-अलग उत्पादों के आयात न्यूनतम सीमा से अधिक रहे हैं।

च. अन्य निवेदन तथा उठाए गए मुद्दे

23. मै0 शांक्सियान केमिकल्स लि0 ने तर्क दिया है कि पाटन का निर्धारण केवल संबंधित जांच अवधि के लिए हो सकता है और माननीय प्राधिकारी के पास पाटन निर्धारण के संबंध में जांच अवधि से पहले, के मुद्दों का कार्य-क्षेत्र शामिल नहीं है। उन्होंने तर्क दिया है कि पिछले दो वर्षों के लिए मांगे गए आंकड़े/जानकारी का प्रयोग जांच अवधि से तुलना के प्रयोजनार्थ किया जाता है और इसका प्रयोग जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन के लिए नहीं किया जा सकता है। निर्यातक द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि चूंकि एनएमई का मुद्दा क्षति, कारणात्मक संबंध,

सार्वजनिक हित, स्थिति, समान उत्पाद जैसे मुद्दों से संबंधित नहीं है लेकिन इसका संबंध केवल ऐसी जानकारी से है जिसके आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण किया जाता है, यह स्पष्ट है कि किसी सुस्पष्ट प्रतिबंधात्मक भाषा के अभाव में भी एनएमई संबंधी मुद्दे को देखा जा सकता है जिसके संबंध में जांच-अवधि के दौरान की स्थिति का पता लगाया जाना हो और न कि उसके पहले की अवधि के बारे में जिससे पाटन मार्जिन का निर्धारण किया जा सकता हो। उन्होंने तर्क दिया है कि जांच अवधि से पहले की अवधि की स्थिति का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

24. प्राधिकारी द्वारा इच्छुक पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है। जहां तक छोड़ी गई अवधियों का संबंध है, जांच अवधि को एक कैलेंडर वर्ष के रूप में दिया गया है ताकि जांच-अवधि को आंकड़ों की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े बिना जांच प्रारंभ के समय तक सीमित रखा जा सके। चूंकि 12 महीने की अवधि के आंकड़ों की जांच की जा रही है, इसलिए पिछले वर्ष की छोड़ी गई तीन महीनों की अवधि से इन आंकड़ों पर ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। किंतु, क्षति संबंधी जांच की अवधि आमतौर पर जांच अवधि से पहले के दो से तीन वित्तीय वर्षों के लिए बढ़ाई जाती है जिससे विभिन्न मापकों के रुख की जांच की जा सके जिससे घरेलू उद्योग को हो रही क्षति इंगित हो सके।
25. जहां तक एनएमई मुद्दों के निर्धारण के संबंध में पाटन निर्धारण तथा निर्यातकों की स्थिति का संबंध है, इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी का निर्यातकों की स्थिति तथा जांच-अवधि से पहले पाटन की स्थिति देखने का कोई कार्य-क्षेत्र नहीं बनता। हालांकि प्राधिकारी इस बात की जांच नहीं कर रहा है कि क्या जांच अवधि से पहले पाटन हुआ है, लेकिन अनुबंध I के पैरा 8(ii) में प्राधिकारी से यह अपेक्षा है कि वह इस बात की जांच करें कि क्या ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत तथा वित्तीय स्थिति पिछली गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे लाए गए पर्याप्त तोड़-मरोड़ के अध्यधीन हैं, विशेषरूप से परिसम्पत्तियों का मूल्य ह्रास, अन्य निपटान, वस्तु-व्यापार तथा ऋणों के मुआवजा द्वारा भुगतान। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि प्रत्युत्तरदाता निर्यातक निजीकरण किए जाने से पहले लंबी अवधि के लिए राज्य संचालित उपक्रम रहे हैं। उन्होंने अपने निवेदनों में यह भी स्वीकार किया है कि चीन पारगमन की स्थिति वाला एक अर्थ-व्यवस्था का देश है और विचाराधीन निर्यातकों ने भी स्वयं को पिछले कुछ वर्षों के दौरान राज्य स्वामित्व से निजी स्वामित्व में बदल दिया है। अतः राज्य के स्वामित्व वाले उपक्रमों से निजीकरण के दावे में परिवर्तन के तंत्र से संबंधित जांच करना आवश्यक है ताकि यह समझ में आ जाए कि क्या

निजीकरण की प्रक्रिया परिसंपत्तियों की सही लागत तथा देयताओं को ठीक से परिलक्षित करती है जिसके बदले में वह उत्पादन लागत तथा संबद्ध माल की कीमतों को कुप्रभावित करता है और यह भी कि क्या निर्यातक की लागत तथा कीमतों पर राज्य के हस्तक्षेप से वाणिज्यिक क्रियाकलापों पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। अतः, प्राधिकारी की राय है कि इस संबंध में इच्छुक पक्षकारों के तर्कों को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

छ. घाटन का निर्धारण

26. जांच प्रारंभ के प्रत्युत्तर में चीन से तीन प्रत्युत्तर प्राप्त हुए हैं अर्थात् मै0 नानजिंग केमिकल्स लि0 (सीबीएस के लिए), मै0 शांडोंग शांक्सियान केमिकल्स लि0 (एमबीटी, एमबीटीएस, सीबीएस, पीवीआई के लिए) और मै0 शांडोंग यांग्यु लि0 (पीवीआई के लिए)। किंतु पीवीआई के संबंध में जांच समाप्त किए जाने के पश्चात् मै0 यांग्यु के विरुद्ध कार्रवाई समाप्त मानी जाती है। चीन जन.गण. के संबंध में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्व धारणा को देखते हुए प्राधिकारी ने ऊपर उल्लिखित अलग-अलग निर्यातकों द्वारा किए गए बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच की। इस संबंध में प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या ये निर्यातक बाजार संकेतकों के तहत काम कर रहे हैं और उनके वाणिज्यिक कार्य किसी पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप द्वारा कुप्रभावित नहीं होते हैं।

छ.1. प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों के बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी दावों की जांच

छ.1.1 मै0 शांडोंग शांक्सियान केमिकल्स कं0 लि0

27. मै0 शांडोंग शांक्सियान केमिकल्स कं0 लि0 ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा किया और तदनुसार पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 तथा 8 के अनुसार एक विस्तृत निवेदन दर्ज कराया। इस आवेदक से बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति के उसके दावे के संबंध में अतिरिक्त जानकारी भी मंगाई गई। प्राधिकारी द्वारा चीन में किए गए मौके पर पड़ताल के दौरान प्रस्तुत जानकारी का सत्यापन भी किया गया ताकि इस निर्यातक के बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति संबंधी दावे की जांच की जा सके। इस सत्यापन के परिणामों की सूचना निर्यातक को एक विस्तृत सत्यापन रिपोर्ट की मार्फत दी गई और उसकी टिप्पणियों की जांच निर्यातक को जारी प्रकटन विवरण-पत्र में की गई। प्राधिकारी ने अन्य बातों के साथ-साथ

पाया कि मैसर्स शांक्सियान आर्गेनिक केमिकल्स फैक्टरी के नाम से यह राज्य स्वामित्व वाला उपक्रम वर्ष 1998-99 में एक संयुक्त पूंजी कंपनी में परिवर्तित हो गया था और इस नए उपक्रम को मैसर्स शांडाँक शांक्सियान केमिकल इंडस्ट्री कं० लि० का नाम दिया गया और पिछले उपक्रम की परिसंपत्तियों का हस्तांतरण तथा देयता पक्षकारों के बीच विभिन्न समझौतों की एक जटिल प्रक्रिया द्वारा हाथ में लिया गया ।

28. प्राधिकारी ने यह भी पाया कि वह मूल्य जिसकी परिसंपत्तियों को सरकारी स्वामित्व वाले उपक्रम को निजी स्वामित्व वाले उपक्रम में हस्तांतरित किया गया और जिस तरीके से देयताओं को समायोजित किया गया अथवा समाप्त किया गया वह इस संयंत्र से विनिर्मित उत्पादों की उत्पादन लागत को तोड़-मरोड़ता है ।
29. इस निर्यातक ने अपने निवेदनों में बार-बार तर्क दिया है कि एनएमई का दायरा पाटन मार्जिन के निर्धारण तक ही सीमित है और माननीय प्राधिकारी का कार्य क्षेत्र जांच अवधि तक ही सीमित है । इस प्रकार, बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का निर्धारण आवश्यक रूप से जांच अवधि के दौरान प्राप्त तथ्यों के आधार पर होना चाहिए न कि पिछली अवधियों के बारे में । उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि न तो घरेलू उद्योग ने ही और न ही प्राधिकारी ने जांच अवधि के पहले की स्थिति के आधार पर अथवा जांच अवधि के पहले की घटनाओं के आधार पर, जांच अवधि के दौरान एनएमई के निर्धारण के लिए किसी प्रमुख कार्य-क्षेत्र में कोई उदाहरण दिया है । उन्होंने तर्क दिया है कि प्रक्रिया तथा मूल्यांकन की समीक्षा का दायरा माननीय प्राधिकारी की शक्ति से परे है ।
30. डब्ल्यूटीओ में चीन के स्वीकृति नयाचार के अनुच्छेद 15 का उद्धरण देते हुए इस निर्यातक ने अन्य बातों के साथ-साथ तर्क दिया है कि गेट 1994 के अनुच्छेद VI तथा पाटनरोधी करार के तहत कीमत तुलना के निर्धारण में आयातक डब्ल्यूटीओ सदस्य जांच के तहत उद्योग के संबंध में या तो चीन की कीमतों अथवा लागतों का प्रयोग करेगा अथवा ऐसी पद्धति का प्रयोग करेगा जो घरेलू कीमतों की सख्त तुलना अथवा चीन की लागतों पर आधारित नहीं होगी ।
31. यह भी निवेदन किया गया है कि चीन में रबड़ रसायन व्यवसाय क्षेत्र किसी अन्य कार्यक्षेत्र में किसी पाटनरोधी जांच में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था दशाओं में कार्य करते नहीं पाया गया है । आगे यह भी निवेदन किया गया है कि इन रबड़ रसायनों को

- सरकारी नियंत्रण अथवा प्रभाव के तहत व्यवसायी क्षेत्र के रूप में उपरोक्त नयाचार के अनुबंध 2क 2 में अभिज्ञात नहीं किया गया है। अतः उन्होंने तर्क दिया है कि इस बात का प्रत्यक्ष रूप से कोई यथोचित आधार नहीं दिखाई देता है जिससे यह माना जाए कि चीन में उपरोक्त रबड़ रसायन व्यवसाय क्षेत्र किसी एनएमई के रूप में कार्यरत नहीं है और इस प्रकार शांक्सियान को एनएमई दशाओं के तहत कार्य करने के लिए बाहर कर दिया मान लिया जाए।
32. उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि पिछली कंपनी को पूर्ण रूप से अथवा उसके किसी कारोबार के संबंध में बोली के लिए किसी सार्वजनिक आमंत्रण के विरुद्ध अधिकांश मौजूद शेयरधारकों तथा प्रबंध मंडल ने सार्वजनिक नोटिस तथा रबड़ रसायन व्यवसाय संबंधी बोली का उत्तर दिया। चूंकि यह कारोबार कई वर्षों तक घाटे में चलता रहा इसलिए इस संबंध में कोई और बोलीदाता शामिल नहीं हुआ। जहां तक ऋण पुनर्निर्धारण तथा उनकी समाप्ति का संबंध है, इस निर्यातक ने अन्य तर्क दिया है कि कुछ समाप्ति सहित ऋण पुनर्निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था में हानि उठा रहे कारोबार के निजीकरण की एक सामान्य विशेषता होती है और उसे बंद करने के विकल्प के रूप में ऐसे निजीकरण में यह प्रक्रिया सर्वोत्तम मानी जाती है।
33. प्राधिकारी नोट करता है कि उक्त नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 में प्राधिकारी से यह अपेक्षा होती है कि वह इस बात की जांच करें कि क्या निर्यातक देश में संबद्ध माल की उत्पादन लागत तथा कीमतों का निर्धारण बाजार संकेतकों द्वारा किया जाता है और उन पर पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप से कुप्रभाव पड़ता है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि परिसंपत्तियों के मूल्य, संयंत्र तथा मशीनों और ऐसे उपक्रम के सरकार से निजी प्रबंधन में हस्तांतरण किए जाते समय की देयताओं के आबंटन से उत्पाद की लागत का निर्धारण होता है।
34. पैरा 8(3)(ख) में भी प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वह इस बात की जांच करें कि क्या ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत तथा वित्तीय स्थिति पिछली गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे लाए गए पर्याप्त तोड़-मरोड़ के अध्वधीन होती हैं, विशेष रूप में मशीनों के मूल्य ह्रास अन्य समापन, वस्तु व्यापार तथा ऋणों के मुआवजे द्वारा भुगतान के संबंध में। अतः यह आवश्यक है कि हस्तांतरण प्रक्रिया तथा इस बात की जांच की जाए कि ऐसे उपक्रम की परिसंपत्तियों तथा देयताओं का निजीकरण के प्रयोजनार्थ किस प्रकार मूल्यांकन किया गया है। अतः निर्यातक की यह दलील

कि प्राधिकारी निजीकरण की स्थिति तथा प्रक्रिया का पता लगाने के लिए जांच अवधि के परे जांच नहीं कर सकता है, तर्कसंगत नहीं है।

35. हस्तांतरण की प्रक्रिया तथा उत्पादन लागत पर उसके प्रभावों की उपरोक्त जांच के अतिरिक्त प्राधिकारी ने उक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 8 में विहित अन्य मापकों की भी जांच की है ताकि इस बात का निर्धारण हो जाए कि क्या कीमतों, लागतों तथा निविष्टियों, कच्चे माल सहित, प्रौद्योगिकीय तथा श्रमिक लागत, उत्पादन, बिक्रियों तथा पूंजी-निवेश के संबंध में निर्यातक के निर्णय ऐसे बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में किए जाते हैं जिससे सप्लाई तथा मांग परिलक्षित होती हो और इस संबंध में पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप के बिना क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतें बाजार मूल्यों को पर्याप्त रूप से परिलक्षित करती हैं।
36. इस निर्यातक ने अपने प्रकटन पश्चात निवेदनों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे के संबंध में अपने रुख को दोहराया है। यह स्वीकार करते समय कि परिसंपत्तियों का मूल्यांकन एक बारगी घटना होती है और इसका "एक बारगी उपदान" का प्रभाव होता है, इस निर्यातक ने तर्क दिया है कि मूल्यांकन के कारण यह एक बारगी उपदान प्रभाव समय के बीच जाने के साथ-साथ धीरे-धीरे कम होगी।
37. प्राधिकारी ने इस निर्यातक के तर्कों और इस निर्यातक की बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति के निर्धारण के लिए तय मापकों की जांच की है और नोट किया/जाता है कि जिस तरीके से निजीकरण की प्रक्रिया की गई है और पिछले एसओई की वित्तीय परिसंपत्तियों का हस्तांतरण नई कंपनी को किया गया है उसके फलस्वरूप विचाराधीन उत्पादों की लागत पर पर्याप्त रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ा प्रतीत होता है। अतः प्राधिकारी की राय है कि इस निर्यातक की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पिछली गैर-बाजार अर्थ-व्यवस्था प्रणाली से आगे लाए गए पर्याप्त तोड़-मरोड़ के अध्वधीन है। अतः घरेलू बाजार में कीमतें इसके सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस उत्पाद की सही-सही कीमत परिलक्षित नहीं करती हैं।

छ.1.2 मै0 नानजिंग केमिकल फैक्टरी

38. मै0 नानजिंग केमिकल फैक्टरी (एनसीएफ) ने भी एक विस्तृत प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया है और बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा किया है। तदनुसार इस निर्यातक ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के पैरा 7 तथा 8 के अनुसार एक

विस्तृत निवेदन प्रस्तुत किया है। इस आवेदक से बाजार अर्थव्यवस्था स्थिति के उसके दावे के संबंध में अतिरिक्त जानकारी भी मंगाई गई। इस प्रस्तुत जानकारी का भी प्राधिकारी द्वारा चीन में मौके पर पड़ताल के दौरान सत्यापन किया गया ताकि इस निर्यातक की बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति के मुद्दे की जांच की जा सके।

39. प्राधिकारी द्वारा की गई जांच से इंगित होता है कि विनिर्माण सुविधा अर्थात् नानजिंग केमिकल संयंत्र को एक सरकारी विभाग से दूसरे सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम में हस्तांतरण किया गया है। अतः वह सभी व्यवहारिक प्रयोजनों के लिए एक सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम रह गया है। इस कंपनी के कानूनी अस्तित्व को 'चाइना पेट्रोकेमिकल कार्पोरेशन नानजिंग केमिकल्स प्लांट (एनसीपी)' के रूप में जाना जाता है और दिनांक 13 सितंबर, 2000 के उपक्रम कानूनी निकाय के व्यवसाय लाइसेंस के अनुसार यह सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम है। आज की स्थिति के अनुसार यह निकाय साइनोपेक की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जिसका डब्ल्यूटीओ में चीन के स्वीकृति न्यायाचार के अनुबंध 2क 2 में उल्लेख है। यह उपक्रम अनेक कार्यकलापों में लगा हुआ है जिसमें कार्बनिक तथा अकार्बनिक रसायनों का विनिर्माण तथा बिक्री शामिल हैं। इस कंपनी द्वारा अपने निवेदनों में इस उपक्रम की स्थिति को एक सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम के रूप में भी स्वीकार किया गया है।
40. इस व्यवसाय हस्ती का प्रबंध एक निदेशक मंडल द्वारा चलाया जाता है जिसमें 5 ऐसे सदस्य होते हैं जिनका चयन पहले स्टॉफ तथा कामगार कांग्रेस द्वारा किया जाता है और दूसरे जिन्हें साइनोपेक द्वारा नियुक्त किया जाता है। इन निदेशकों से अपेक्षा है कि वे शेयरधारकों तथा संबंधित पक्षकारों की ओर से काम करें। किंतु यह नोट किया जाता है कि इस कंपनी में सरकार का साइनोपेक के जरिए 100% नियंत्रण होता है। इस कंपनी ने यह भी दावा किया है कि कार्य-चालन तथा वित्तीय निर्णयों के मामले में न तो साइनोपेक और न ही एनसीपी के निदेशक निर्णयों में हस्तक्षेप कर सकते हैं।
41. किंतु, इस निर्यातक ने तर्क दिया है कि इस तथ्य के बावजूद कि वे एक सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम है, प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि उसके वाणिज्यिक कार्यकलापों में ऐसा कोई पर्याप्त हस्तक्षेप होता है जिससे जांच के अधीन माल की लागतों तथा कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। किंतु, इस कंपनी के वाणिज्यिक निर्णयन की प्रक्रिया में स्वामियों के शामिल होने संबंधी जांच के लिए स्वामित्व तथा स्वामित्व का नियंत्रण एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। उपरोक्त जांच से

इंगित होता है कि यह निर्यातक हस्ति सरकारी नियंत्रण के अधीन है और इस तथ्य के बावजूद कि कामगार कांग्रेस का इस हस्ती के प्रबंधन के चयन में एक भूमिका होती है, वह साइनोपेक के जरिए सरकार द्वारा सरकारी नियंत्रण तथा पर्याप्त प्रबंधन नियंत्रण के अधीन है ।

42. प्राधिकारी ने यह देखने के लिए हस्तांतरण प्रक्रिया की भी जांच की है कि क्या इस व्यवसाय हस्ती की मौजूदा लागतों तथा कीमतों पर हस्तांतरण प्रक्रिया, परिसंपत्ति मूल्यांकन तथा देयताओं के समापन, आदि द्वारा प्रतिकूल प्रभाव अथवा कोई अन्य प्रभाव पड़ता है । यह बात संज्ञान में आई है कि एनसीपी के साइनोपेक में विलय अथवा हस्तांतरण के समय एनसीपी की परिसंपत्तियों, देयताओं तथा इक्विटियों के अपुष्ट समेकित लाभ तथा हानियों के साथ " ब्याज की पूर्ति " पद्धति का प्रयोग करते हुए मान लिया गया था । इस निर्यातक द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि साइनोपेक द्वारा एनसीपी का अधिग्रहण इक्विटियों के प्रयोग के माध्यम प्राप्त किया गया । विलय की गई हस्ती की संयुक्त परिसंपत्तियों का समेकन बही मूल्य के प्रयोग द्वारा जोकि खरीद पद्धति के विपरीत होता है, किया गया । विलय वाली हस्तियों के वित्तीय परिणामों का संयोजन किया गया, हालांकि दोनों हस्तियां हमेशा ही एकल हस्ती के रूप में विद्यमान रही हैं । इस बात की भी पुष्टि की गई कि हस्तांतरण के समय उन परिसंपत्तियों, देयताओं तथा इक्विटियों का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया । सत्यापन के समय यह स्पष्ट किया गया था कि उक्त हस्तांतरण एक सरकारी विभाग से दूसरे सरकारी विभाग में किया गया था । अतः यह हस्तांतरण के समय बही मूल्य के आधार पर हस्तांतरण किया गया था और परिसंपत्तियों, देयताओं तथा इक्विटियों के मूल्यांकन की कोई आवश्यकता नहीं रही थी ।
43. प्राधिकारी नोट करता है कि वास्तव में एनसीपी के निजीकरण की कोई प्रक्रिया नहीं अपनाई गई । यह अभी भी एक सरकारी स्वामित्वाधीन हस्ती के रूप में कायम है । किंतु, इस हस्ती द्वारा साइनोपेक में अपने विलय से आगे लाए गए बही समायोजनों तथा समापनों के जरिए इस हस्ती ने जांच अवधि में निवल लाभ दर्शाया है जबकि उसने अपने खाते में संचित हानियों को भी शामिल किया था । इसलिए विलय की प्रक्रिया तथा विभिन्न लागत तत्व विभिन्न समायोजनों तथा समापनों द्वारा निर्धारित किए गए जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि उत्पादन लागत तथा उत्पादों की कीमतों के प्रभाव को काफी तोड़ा-मरोड़ा गया है ।

44. हस्तांतरण की प्रक्रिया तथा उत्पादन लागत पर उसके प्रभावों संबंधी उपरोक्त जांच के अलावा, प्राधिकारी ने उक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 8 में निर्धारित अन्य कारकों की भी जांच की ताकि इस बात का निर्धारण हो सके कि क्या कीमतों, लागतों तथा निविष्टियों, कच्चे माल सहित, प्रौद्योगिकी तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियों तथा निवेश के संबंध में निर्यातक के निर्णय उन बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में किए जाते हैं जिससे सप्लाई तथा मांग बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के परिलक्षित होती हैं, चाहे प्रमुख निविष्टियों की लागतें बाजार मूल्य को पर्याप्त रूप से परिलक्षित करती हों ।
45. प्राधिकारी ने कच्चे माल की वसूली तथा वसूली प्रक्रिया में सरकारी हस्तक्षेप, यदि कोई हो, की जांच की । खड़ रसायनों के उत्पादन में कच्चा माल बेंजानेन होता है जिसे उनकी अनुषंगी कंपनी अर्थात् शांडांग पेट्रोकेमिकल्स, जो मै0 साइनोपेक, चीन की एक सहायक कंपनी है, से प्राप्त किया जाता है । इस बात की जांच करने के लिए मै0 शंघाई पेट्रोकेमिकल्स के परिसरों में सत्यापन कार्य भी किया गया कि क्या सौदे संबंधित पक्षकारों के बीच परस्पर किए गए ।
46. इस निर्यातक ने दावा किया है कि शंघाई पेट्रोकेमिकल्स तथा नानजिंग पेट्रोकेमिक फैक्टरी के बीच किए गए सौदे परस्पर किए गए हैं और माल का कीमत ढांचा इस तथ्य के बावजूद विशुद्ध रूप से बाजार आधारित है कि दोनों ही पक्षकार अपनी-अपनी सामान्यधारक कंपनी की मार्फत विद्यमान हैं । यह तर्क दिया गया कि यह कंपनी अपने शेयरधारकों तथा उनके हितों के प्रति उत्तरदायी है और उसके विदेशी शेयरधारक ऐसी किसी अन्य कंपनी के साथ किसी भी प्रकार के मुआवजा व्यापार की अनुमति नहीं देंगे जिससे उनकी लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो । शंघाई पेट्रोकेमिकल्स से खरीदा गया बेंजानेन ***** आरएमबी प्रति मी.टन रहा । इस कंपनी ने दावा किया कि चीन के खुले बाजार में बेंजानेन की भारित औसत कीमत ***** आरएमबी प्रति मी.टन रही ।
47. प्राधिकारी ने जनसुविधाओं की खरीद, पूंजी निवेश निर्णयों, मुआवजा तथा वस्तु-व्यापार, यदि कोई हो, दिवालियापन तथा संपदा कानूनों के अनुप्रयोग तथा विनिमय दर परिवर्तन की भी जांच की ।
48. इस निर्यातक ने अपने प्रकटन पश्चात् निवेदनों में यह बात दोहराई है कि एक सरकारी स्वामित्वाधीन उपक्रम के रूप में वह अपने कार्य-चालन तथा वित्तीय निर्णयों

के मामले में एक स्वतंत्र बाजार हस्ती भी है और सरकारी स्वामीत्वाधीन उपक्रम का आशय गैर-बाजार अर्थव्यवस्था नहीं होता है। उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि उत्पादन लागत साइनोपेक में हस्तांतरण की मार्फत तोड़ी-मरोड़ी नहीं गई है।

49. प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध सभी तर्कों तथा तथ्यों की जांच की है और वह पाता है कि यह निर्यातक हस्ती एक पूर्णतया सरकारी नियंत्रणाधीन उपक्रम के रूप में कायम है और इस निर्यातक का प्रबंध नियंत्रण, पूंजी निवेश और लागत तथा कीमत निर्णय में पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप अभी भी जारी है और ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत तथा वित्तीय स्थिति पिछली गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे लाए गए पर्याप्त तोड़-मरोड़ के अधीन होती है। अतः प्राधिकारी का निर्णय है कि इस निर्यातक की लागत तथा कीमतों को उसके सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ स्वीकार नहीं किया जा सकता।

छ.2 सामान्य मूल्य का निर्धारण

50. प्राधिकारी नोट करता है कि चीन के सहयोगकारी निर्यातकों ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में निर्यातक देश के सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अपने-अपने घरेलू बिक्री सौदों के ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। किंतु, निजीकरण की प्रक्रिया अथवा संबंधित निर्यातकों के विलय से प्रभावित लागत तथा कीमतों में पर्याप्त तोड़-मरोड़ के मद्देनजर प्राधिकारी की राय है कि इन तीनों निर्यातकों के संबंध में पिछली गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से पर्याप्त तोड़-मरोड़ को आगे ले जाने से इंकार नहीं किया जा सकता है और इसीलिए घरेलू बाजार में इन उत्पादों की लागत तथा कीमतों का निर्धारण सही बाजार संकेतकों द्वारा नहीं किया जाता है। अतः, प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 7 के अनुसार चीन जन.गण. में इन उत्पादों के सामान्य मूल्य की गणना की है।

51. अनुबंध के I के पैरा 7 में यह प्रावधान है कि:

" गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थ-व्यवस्था के तीसरे देश की कीमत अथवा निर्धारित मूल्य अथवा तीसरे देशों से अन्य देशों से ली गई कीमत, जिसमें भारत शामिल है, अथवा जहां यह संभव नहीं हो, किसी अन्य यथोचित आधार, जिसमें समान उत्पाद के लिए बाजार में वास्तव में दी गई अथवा देय कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो, विधिवत

- समायोजन करके जिसमें यथोचित लाभ मार्जिन शामिल हो, के आधार पर किया जाएगा । किसी समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन एक यथोचित तरीके में किया जाएगा (संबंधित देश के विकास स्तर तथा प्रश्नाधीन उत्पाद को ध्यान में रखते हुए) और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय जानकारी को ध्यान में रखा जाएगा । ऐसा ध्यान जांच की समय-सीमा के भीतर भी रखा जाएगा, जहां कहीं समुचित हो, यदि कोई हो, किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी तरह रखा जाएगा । जांच में शामिल पक्षकारों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त चयन के बारे में बिना यथोचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी अपनी टिप्पणी देने के लिए यथोचित समयावधि प्रदान की जाएगी ।
52. प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों सहित इच्छुक पक्षकारों तथा एटीएमए ने तर्क दिया है कि पैस 7 की योजना के तहत सामान्य मूल्य का निर्धारण पद्धति के पहले सैट अर्थात् किसी समुचित तीसरे देश की कीमत अथवा उत्पादन-लागत के आधार पर किया जाएगा और प्राधिकारी पद्धति के दूसरे सैट अर्थात् भारत में प्रदत्त अथवा देय कीमत का तब सहारा ले सकता है जब पद्धति के पहले सैट के तहत कीमत का निर्धारण करना संभव नहीं हो सके । अन्य शब्दों में, निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह अवश्य कर लेना चाहिए कि वे वैकल्पिक प्रक्रिया आरंभ करने से पहले प्रथम पद्धति को समाप्त कर ले । उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि समुचित तीसरे देश के चयन की सूचना निर्यातकों को दे दी जाए और सामान्य मूल्य के निर्धारण से पहले उनकी टिप्पणी प्राप्त कर ली जाए ।
53. निर्यातकों ने आगे यह भी तर्क दिया है कि भारत एक प्रतिनिधि अर्थव्यवस्था के रूप में एक अनुचित विकल्प है क्योंकि उसके पास कच्चा माल उपलब्ध नहीं है और उसने विकास, क्षमता तथा बुनियादी सुविधाएं और चीन के उत्पादकों को उपलब्ध तर्क-संगत लाभ/संसाधन प्राप्त नहीं किए हैं । उन्होंने तर्क दिया है कि चीन में उत्पादन लागत तथा निर्यात लागत भारत की तुलना में कहीं कम है और चीन की तुलना में भारत एक तुलना योग्य अर्थव्यवस्था नहीं है । इस प्रकार भारत एक प्रतिनिधि अर्थव्यवस्था के मामले में एक अनुचित विकल्प है ।
54. प्राधिकारी ने ऊपर उल्लिखित नियमावली के संदर्भ में इच्छुक पक्षकारों के उपरोक्त तर्कों की जांच की है और वह नोट करता है कि किसी तुलनीय तीसरे देश में संबद्ध माल की उत्पादन लागत तथा कीमतों के संबंध में पर्याप्त विश्वसनीय जानकारी

सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ किसी समुचित तीसरे देश के चयन के संबंध में उपलब्ध नहीं थी। अतः, इच्छुक पक्षकारों द्वारा इंगित पद्धतियों के पहले सैट का प्रयोग करना संभव नहीं था। प्राधिकारी के समक्ष किसी समुचित तीसरे देश के चयन के संबंध में प्रश्नावली प्रत्युत्तर अथवा उसके पश्चात के निवेदनों के समय न तो प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों और न ही अन्य इच्छुक पक्षकारों ने कोई विश्वसनीय तथा सत्यापन योग्य जानकारी प्रस्तुत की है। दूसरी ओर, घरेलू उद्योग के आवेदन-पत्रों में स्पष्ट रूप से इंगित किया गया कि उन्होंने जो सामान्य मूल्य की गणना की है वह भारत में प्रदत्त अथवा देय कीमत के आधार पर है।

55. अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण उक्त नियमावली के अनुबंध-I के परा 7 के अनुसार चीन के सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सर्वाधिक यथोचित पद्धत के रूप में यथोचित लाभ मार्जिन हेतु विधिवत समायोजन कर "भारत में प्रदत्त अथवा देय कीमत के आधार पर किया है। तदनुसार, विचाराधीन उत्पादों के सामान्य मूल्य तय किए गए हैं जो एमबीटी के लिए **** अम.डा. प्रति किग्रा., एमबीटीसी के लिए **** अम.डा. प्रति किग्रा. और सीबीएस के लिए **** अम.डा. प्रति किग्रा. तय किया गया है।

छ.3 निर्यात कीमतें

56. चीन के सहयोगकारी निर्यातकों ने भारत को संबद्ध माल के अपने निर्यातों के संबंध में ब्यौरे दिए हैं और प्राधिकारी ने अलग-अलग समायोजनों के उनके दावों सहित इन निर्यातों के संबंध में आंकड़ों का सत्यापन किया है ताकि निवल निर्यात कीमतों का निर्धारण किया जा सके। तदनुसार, निर्यात कीमतों का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

छ.3.1 मै0 शांडोंग शांक्सियान केमिकल्स लि0, चीन

एमबीटी

57. इस निर्यातक ने भारत को जांच अवधि के दौरान *** अम.डा./मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर **** मी.टन एमबीटी का निर्यात किया। इस निर्यात कीमत में निर्यातक के रिकॉर्ड के अनुसार समुद्री भाड़े, अंतर्देशीय भाड़े, बीमा तथा सुपुर्दगी प्रभारों का समायोजन किया गया है जोकि *** अम.डा./मी.टन बैठता है।

इन सौदों पर कोई कमीशन तथा छूट देय नहीं पाई गई । तदनुसार, निवल कारखानागत निर्यात कीमत का उपरोक्त के अनुसार समायोजनों की अनुमति दिए जाने के पश्चात *** अम.डा./मी.टन पर निर्धारण किए जाने का प्रस्ताव है ।

एमबीटीएस

58. जहां तक एमबीटीएस का संबंध है, इस निर्यातक ने भारत को जांच अवधि के दौरान *** अम.डा./मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर इसका **** मी.टन निर्यात किया । इस निर्यात कीमत में निर्यातक के रिकॉर्ड के अनुसार समुद्री भाड़े, अंतर्देशीय भाड़े, बीमा तथा सुपुर्दगी प्रभारों का समायोजन किया गया है जोकि *** अम.डा./मी.टन बैठता है । तदनुसार, निवल कारखानागत निर्यात कीमत का उपरोक्त के अनुसार समायोजनों की अनुमति दिए जाने के पश्चात *** अम.डा./मी.टन पर निर्धारण किए जाने का प्रस्ताव है ।

सीबीएस

59. इस निर्यातक ने भारत को जांच अवधि के दौरान *** अम.डा./मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर **** मी.टन सीबीएस का निर्यात किया । इस निर्यात कीमत में निर्यातक के रिकॉर्ड के अनुसार समुद्री भाड़े, अंतर्देशीय भाड़े, बीमा तथा सुपुर्दगी प्रभारों का समायोजन किया गया है जोकि *** अम.डा./मी.टन बैठता है । इन सौदों पर कोई कमीशन तथा छूट देय नहीं पाई गई । तदनुसार, निवल कारखानागत निर्यात कीमत का उपरोक्त के अनुसार समायोजनों की अनुमति दिए जाने के पश्चात *** अम.डा./मी.टन पर निर्धारण किए जाने का प्रस्ताव है ।

छ.3.2 मै0 नानजिंग केमिकल्स

60. मै0 नानजिंग केमिकल्स ने केवल एक उत्पाद अर्थात् सीबीएस के संबंध में अपना प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया है । इस निर्यातक ने भारत को जांच अवधि के दौरान *** अम.डा./मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर **** मी.टन सीबीएस का निर्यात किया । इस निर्यात कीमत में निर्यातक के रिकॉर्ड के अनुसार समुद्री भाड़े, अंतर्देशीय भाड़े, बीमा तथा सुपुर्दगी प्रभारों का समायोजन किया गया है जोकि *** अम.डा./मी.टन बैठता है । इन सौदों पर कोई कमीशन तथा छूट देय नहीं पाई गई । तदनुसार, निवल कारखानागत निर्यात कीमत का उपरोक्त के अनुसार

समायोजनों की अनुमति दिए जाने के पश्चात *** अम.डा./मी.टन पर निर्धारण किया गया है ।

छ.3.3 चीन के अन्य सभी निर्यातक

61. चीन के असहयोगकारी निर्यातकों के संबंध में निवल निर्यात कीमतों का निर्धारण सहयोगकारी निर्यातकों के न्यूनतम सौदा मूल्य के आधार पर किया गया है जिसमें उपलब्ध तथ्यों पर आधारित व्यापार समायोजन का स्तर समायोजित है ।

छ.4 पाटन मार्जिन

62. अलग-अलग उत्पादों की भारत औसत निवल निर्यात कीमतों की तुलना अपनाए जाने हेतु प्रस्तावित निर्धारित सामान्य मूल्यों तथा अलग-अलग पाटन मार्जिनों से की गई है जोकि निम्नानुसार बैठती है:-

	शांक्सियान			नानजिंग	अन्य सभी निर्यातक		
	एमबीटी	एमबीटीएस	सीबीएस	सीबीएस	एमबीटी	एमबीटीएस	सीबीएस
सीएनवी रु0 प्रति किग्रा.	***	***	***	***	***	***	***
नि.की.रु. प्रति किग्रा.	***	***	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन	***	***	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	39%	32%	36%	32%	43%	37%	38%

63. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन पर्याप्त तथा न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है ।

ज. क्षति और कारणात्मक संबंध

64. इस बात का निर्धारण करने के बाद कि संबद्ध देशों से संबद्ध माल भारतीय बाजार में पर्याप्त रूप से उसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर प्रवेश कर रहा है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति, यदि कोई है, की निम्नानुसार जांच की है:-

ज.1 निर्यातकों, आयातकों और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

65. इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान एनओसीआईएल को ऐसी कोई क्षति नहीं हुई है जो चीन के निर्यातकों द्वारा तथाकथित पाटन के कारण हुई हो। इच्छुक पक्षकारों के तर्कों को संक्षिप्त रूप में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार दिया गया है:-

- कि एनओसीआईएल ने स्वयं अपने प्रार्थना-पत्र में विशिष्ट रबड़ रसायनों के संबंध में अनेक प्रमुख मापकों जैसे क्षमता, क्षमता उपयोग, बिक्री तथा बिक्री वसूली में सुधार की बात स्वीकार की है।
- कि याचिकाकर्ता ने क्षमता में वृद्धि की है हालांकि यह मांग में वृद्धि से कम रही है।
- कि क्षमता उपयोग सीबीएस तथा एमबीटीएस के मामले में जांच अवधि में मामूली तौर पर कम हुई प्रतीत होती है और एमबीटी के लिए यह स्थिर रहा है।
- कि बाजार हिस्से में कोई भी गिरावट कम माल सूची की वजह से रही और इस प्रकार उत्पादों के लिए मांग पर कम उपलब्धता और निर्यातों में वृद्धि रही।
- कि घरेलू लाभ में संचयी गिरावट निर्यात लाभ में गिरावट की प्रवृत्ति से कहीं कम है और इसी प्रकार संबद्ध माल के संबंध में संचयी लाभ रबड़ रसायन डिविजन के समग्र रूप में उसके समग्र लाभ से बेहतर है।
- कि अथॉरिटी को यह अवश्य चाहिए कि वह न केवल एक अथवा दो अनुसूचियों (जैसे बाजार हिस्सा) बल्कि अनेक अनुसूचियों का मूल्यांकन करे जब वह इस बात पर विचार कर रहे हों कि क्या अथवा अन्यथा घरेलू उद्योग को कोई हानि हुई है।
- कि अनेक सुधारों को स्वीकार किया गया है और क्षति होने का दावा केवल बाजार हिस्से, लाभ, नकद प्रवाह तथा पूंजी निवेश पर आय के संबंध में किया गया है। बाजार हिस्से में कोई भी गिरावट क्षमता, स्वीकृत अधिक निर्यातों तथा कम माल सूची की तुलना में मांग में अधिक वृद्धि के कारण रही जिससे घरेलू बाजार के लिए मांग की कम उपलब्धता रही क्योंकि अधिकांश प्रयोक्ता मौके पर वसूली का सहारा लेने लगे हैं। लाभ, नकद प्रवाह तथा आय में तथाकथित गिरावट केवल एमबीटी/एमबीटीएस के संबंध में रही न कि सीबीएस के संबंध में।
- कि क्षति कम बिक्री वसूली से अधिक निर्यात के कारण ही प्रतीत होती है।

- कि सितंबर, 2003 तक के लिए एनओसीआईएल की वार्षिक रिपोर्ट यह इंगित करती है कि रबड़ रसायन डिवीजन सुधार दिखा रहा है और उसके ऐसे करते रहने की आशा है तथा पेट्रोकेमिकल डिवीजन की समस्या अर्थात् बंद होने का प्रस्ताव अभिज्ञात की गई है ।
 - कि एनओसीआईएल बाजार से निधियों का ऋण ले सका है जिससे पूंजी उठाने में कोई कठिनाई तथा कोई भी श्रेयस्कर क्षति इंगित नहीं होती है ।
 - कि चूंकि एनओसीआईएल बहु-उत्पाद कंपनी है, अतः उसने अन्य उत्पादों के लिए उत्पाद विशिष्ट आंकड़े दर्ज नहीं कराए हैं । इसलिए क्षति संबंधी विश्लेषण नहीं किया जा सकता है, जैसका एनओसीआईएल के अन्य उत्पादों की तुलना में संबद्ध माल के आधार पर अपेक्षित है ।
 - कि क्षति की आशंका के आरोपों के संबंध में प्राधिकारी को विशेष ध्यान देना चाहिए और याचिकाकर्ता को तथाकथित वास्तविक क्षति की तुलना में अच्छा साक्ष्य प्रस्तुत कर देना चाहिए ।
 - कि आयातों की मात्रा संबंधी प्रभाव दिखाई नहीं देता है अथवा 'मात्रा प्रभाव' आरोप से कहीं कम भी हो सकता है ।
 - कि 'कीमत प्रभाव' दिखाई नहीं देता है क्योंकि कोई भी कीमत दबाव अथवा कीमत दाब अथवा कम कीमत पर बिक्री अथवा कीमत कटौती दिखाई नहीं गई है ।
 - कि प्रत्येक अलग-अलग रबड़ रसायन के संबंध में क्षमता में जांच अवधि के दौरान सतत रूप से वृद्धि होती रही है लेकिन घरेलू उद्योग के संयंत्र तथा मशीनरी में पूंजीनिवेश में क्षमता में वृद्धि के अनुरूप नहीं हुआ है ।
 - कि एनओसीआईएल भावी मांग को देखते हुए मौजूदा मांग को भी पूरा नहीं कर सकता है ।
66. उपरोक्त के अलावा, इच्छुक पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि किसी भी पाटनरोधी शुल्क की उगाही की सिफारिश के लिए न तो पाटन और न ही क्षति एक पर्याप्त शर्त होती है । उन्होंने तर्क दिया है कि जर्मनी भी भारत के लिए एक संभावित निर्यातक हो संकता है जो उसे एनओसीआईएल की तुलना में अधिक लाभ पहुंचा सकता है, यदि कोई पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है । जर्मनी की निर्यात कीमतें (जिसे उक्त जांच में संबद्ध देशों में शामिल नहीं किया गया है) जांच अवधि के दौरान चीन की कीमतों की तुलना में कम रही प्रतीत होती है । इस प्रकार उनसे भी क्षति होने की संभावना है, यदि संबद्ध देशों से अधिक कीमत वाले आयात से क्षति

हो सकती है और उनके निर्यातों से एनओसीआईएल की बिक्रियों में वृद्धि की तुलना में और अधिक वृद्धि होने की संभावना है, बशर्ते चीन के निर्यातकों पर कोई पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है। इस प्रकार, किसी पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप एनओसीआईएल को हो रही किसी भी क्षति को समाप्त करने की तुलना में चीन के निर्यातकों को बाजार प्रवेश की मनाही हो सकेगी।

67. यह भी तर्क दिया गया है कि जांच अवधि के दौरान भारत की कीमतों की तुलना में कम कीमतों पर अधिक निर्यात होने से प्रत्यक्ष रूप से क्षति का वैकल्पिक कारण तथा कोई कारणात्मक संबंध नहीं होना इंगित होता है। एनओसीआईएल ने भी अपना पेट्रोकेमिकल डिविजन बंद कर दिया और मूल रूप से पेट्रोसायनों का ऋण नहीं देने के कारण और विशेष रूप से महंगे नाफ्था और कामगारों की छंटनी तथा छांटे नहीं गए अधिक कामगारों की वजह से अन्य डिविजनों में हानि उठानी पड़ी।

ज.2 घरेलू उद्योग के विचार

68. घरेलू उद्योग ने इच्छुक पक्षकारों के उन तर्कों का खंडन किया है कि घरेलू उद्योग को चीन से पाटित आयातों के कारण कोई वास्तविक क्षति नहीं होती है और क्षति, यदि कोई है, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारणों से होती है। उन्होंने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में एमबीटी वृद्धि और आयातों में लैंडेड कीमत में गिरावट के मामले में इसका घरेलू उद्योग की मूल्य मात्रा तथा बाजार हिस्से में गिरावट के प्रत्यक्ष परिणाम आया है। एम बी टी एस तथा सीबीएस के मामले में पाटित आयातों के परिणामस्वरूप बढ़ती लागतों, पर्याप्त कीमत कटौती, बाजार हिस्से में हानि तथा लाभप्रदता में गिरावट के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। अतः घरेलू उद्योग का तर्क है कि उन्हें चीन से पाटित आयातों की वजह से पर्याप्त वास्तविक क्षति हुई है।
69. अपने प्रकटन पश्चात निवेदन में घरेलू उद्योग ने अक्षतिकारी कीमत की गणना तथा कई आधारों पर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली की गणना का खंडन किया है। प्राधिकारी ने इस संबंध में घरेलू उद्योग के दावों की जांच की है और गणना में आई त्रुटियों को क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ ठीक कर दिया है।

ज.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

70. चीन से पाटन की मात्रा तथा सीमा की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई है और पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को इस प्रकार हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की है। प्राधिकारी निर्णय देता है कि आवेदक कंपनी अर्थात् एनओसीआईएल जांच अवधि के दौरान संबद्ध उत्पाद के भारतीय उत्पादन का प्रमुख हिस्सेदार है। अतः क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवेदक कंपनी को इस नियमावली के आशय के भीतर घरेलू उद्योग का दर्जा दिया जाता है।
71. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह उपबंध है कि क्षति निर्धारण में उन कारकों की जांच शामिल होगी जो घरेलू उद्योग को क्षति होने की इंगित करते हों और यह "पाटित आयातों की मात्रा सहित सभी संगत कारकों, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव को ध्यान में रखते हुए" किया जा सकेगा। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करने में यह आवश्यक समझा जाता है कि इस बात की जांच की जाए कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमतें गंभीर रूप से घटने लगीं, पाटित आयातों द्वारा कीमत में काफी कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण अन्यथा कीमतों में काफी सीमा तक मंदी आई है अथवा कीमत वृद्धि में बाधा आई है जोकि अन्यथा काफी मात्रा में हुई होती।
72. प्राधिकारी नोट करता है कि इस जांच में रबड़ उद्योग में प्रयुक्त तीन अलग-अलग रसायनों को कवर किया गया है। अतः क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ भी इन उत्पादों को तीन विभिन्न तथा अलग-अलग उत्पाद माना गया है और अलग-अलग उत्पादों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच भी अलग-अलग की गई है किंतु, इस उद्योग की समग्र स्थिति और घरेलू उद्योग के रबड़ रसायन व्यवसाय पर आयातों के प्रभाव की यथा संगत सीमा तक जांच की गई है।
73. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की स्थिति से संबंधित अनुसूचियों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन मार्जिन की मात्रा, आदि पर उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

74. प्राधिकारी द्वारा एनआईपी तथा निवल बिक्री वसूली के निर्धारण के संबंध में घरेलू उद्योग के तर्कों की जांच की गई है और जहां तक हो सका, तर्क तथा सुझाई गई गणना पद्धति को स्वीकार्य पाया गया जिसके लिए आवश्यक शुद्धियां शामिल कर दी गई है। प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के निष्पादन पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण करते समय पेट्रोकेमिकल डिविजन के बिविलियन के सम्भावित प्रभाव की भी जांच की गई।

ज.3.1 अपनाई गई तुलना पद्धति

75. विचाराधीन उत्पाद अर्थात् एमबीटी, एमबीटीएस तथा सीबीएस तीन अलग-अलग उत्पाद हैं जो नियम 2(घ) के आशय के भीतर परस्पर समान वस्तुएं नहीं हैं। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन के लिए अलग-अलग किया है। यह क्षति जांच 2000-2001, 2001-2002, 2002-2003 और जनवरी-दिसंबर, 2003 (जांच अवधि) के वर्षों से संबंधित आंकड़ों पर विचार करते हुए की गई है। प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग में पर्याप्त निर्यात कार्यकलाप होने की जानकारी पाई गई है। किंतु, क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन का आकलन केवल घरेलू बाजार के संबंध में ही किया गया है और घरेलू उद्योग को उसके निर्यात निष्पादन के कारण क्षति, यदि कोई है, वह पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है।

ज.3.2 आयात आंकड़े और अन्य मुद्दे

76. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी से यह अपेक्षा है कि वह इस बात पर विचार करे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप अथवा उत्पादन से संबंधित अथवा भारत में उत्पादन तथा खपत के अनुरूप काफी वृद्धि हुई है।
77. चीन से प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन की आयात मात्रा का विश्लेषण डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों और गौण स्रोत(आईबीआईएस) की रिपोर्ट के आधार पर किया गया है। सभी रबड़ रसायनों के संबंध में आईबीआईएस द्वारा बताए गए सौदेवार आंकड़ों की तुलना डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों से की गई है जिससे अलग-अलग उत्पादों की पहचान और अलग-अलग उत्पादों के संबंध में आंकड़ों का संकलन किया जा सके। किंतु, यह संज्ञान में आया है कि या तो

डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में इन उत्पादों का सही विवरण परिलक्षित नहीं होता है या गलत वर्गीकरण के कारण अनेक आंकड़े गायब हैं। जहां आईबीआईएस के आंकड़े चुनिंदा प्रमुख पत्तनों के जरिए होने वाले आयातों की रिपोर्ट देते हैं वहां उसमें असंबंधित उत्पादों के आंकड़ों की छंटनी करने के पश्चात डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों की तुलना में आयात मात्रा में अधिक वृद्धि दर्शाते हैं। अतः क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस की रिपोर्ट में दिए गए आंकड़ों पर विश्वास किया गया है और जहां तक संभव हुआ, असंबंधित उत्पादों के संबंध में आंकड़ों की छंटनी करने के बाद उनका उपयोग किया गया है।

ज.4 क्षति तथा कारणात्मक संबंध

78. प्राधिकारी ने यह निर्धारित करने के लिए आवश्यक क्षति मापकों की जांच की है कि क्या घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होती है। घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले सभी आर्थिक कारकों, जैसाकि ऊपर इंगित किया गया है, जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, आदि की निम्नानुसार जांच की गई है:-

ज.4.1 पाटित आयातों की मात्रा संबंधी प्रभाव: आयात मात्रा तथा बाजार हिस्से

ज.4.1.1 एमबीटी

क) आयात मात्रा

79. जांच के आधार पर एमबीटी के आयात आंकड़े तथा आयात मात्रा निम्नानुसार बैठती है:-

मात्रा मी.टन में

एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
पाटित आयात(चीन)	9	21	138	155
प्रवृत्ति	100	233	1534	1722
कुल आयात सीबीएस	10	22	139	162
प्रवृत्ति	100	210	1347	1574

80. उपरोक्त आंकड़े यह इंगित करते हैं कि चीन से पाटित आयातों में आधार वर्ष की तुलना में काफी वृद्धि हुई है और पाटित आयातों का हिस्सा इस उत्पाद के कुल आयातों के 95% से भी अधिक रहा ।

ख) क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर प्रभाव:

81. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग पर इन आयातों के प्रभाव की भी जांच की है:

एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
क्षमता(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृत	100	107	121	129
उत्पादन(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृत	100	78	71	76
क्षमता उपयोग(%)	87.35	63.97	51.38	51.76

82. किंतु, प्राधिकारी के संज्ञान में यह लाया गया है कि एमबीटी का संपूर्ण उत्पादन एनओसीआईएल द्वारा अपने सहायक एकक से आऊटसोर्स किया जाता है जो अनन्य उत्पादन करार के तहत होता है जिसके लिए आधारिक कच्चा माल एनएमबीटी सहित पूरा कच्चा माल एनओसीआईएल द्वारा सप्लाई किया जाता है और प्रोसेसरों द्वारा जॉब वर्क आधार पर केवल इसकी प्रोसेसिंग की जाती है । अतः, ऊपर इंगित क्षमता घरेलू उद्योग की अपनी क्षमता नहीं है हालांकि प्रोसेसर की क्षमता एनओसीआईएल के उत्पादन के लिए ही समर्पित होती है । प्राधिकारी के संज्ञान में यह भी लाया गया है कि प्रोसेसर की क्षमता ड्रायर क्षमता तक ही सीमित रही और ड्रायर उत्पादकता में सुधार करके इस उत्पाद की कुल क्षमता बिना किसी पूंजी निवेश के जांच अवधि के दौरान *** मी.टन तक पहुंच गई । लेकिन घरेलू बाजार में हुई बिक्री मात्रा में गिरावट के प्रत्युत्तर में क्षति अवधि में उत्पादन तीव्रता से गिर गया । किंतु, इच्छुक पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि चूंकि यह उत्पादन क्षमता आवेदक की नहीं है, इसलिए उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में गिरावट के कारण क्षति, यदि कोई है, आवेदक को नहीं हुई है ।

ग) बिक्रियों पर वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव

83. उपरोक्त उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के बिक्री तथा बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:-

				मात्रा: मी.टन
एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू बिक्रियां	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	114	83	79
कैप्टिव खपत	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	90	80	75
निर्यात	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	128	151	282
अन्य बिक्रियां	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	95	107	128
कुल घरेलू बिक्रियां	1925	2144	2626	2457
प्रवृत्ति	100	104	95	104
आयात	10	22	139	162
प्रवृत्ति	100	210	1347	1574
कुल घरेलू मांग	920	964	998	1093
प्रवृत्ति	100	105	108	119
पाटित आयात	9	21	138	155
प्रवृत्ति	100	233	1534	1722
कुल आयात में पाटित आयात का हिस्सा	87	97	99	95
मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
पाटित आयात	****	****	****	****
अन्य	****	****	****	****
सूचीकृत				

घरेलू उद्योग	100	109	77	66
पाटित आयात	100	223	1414	1451
अन्य	100	91	99	108

84. उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि एनबीटी की घरेलू बिक्रियों तथा कैंप्टिव खपत में क्षति अवधि की तुलना में 21% की गिरावट रही। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी आधार वर्ष की तुलना में 34% की गिरावट रही जबकि पाटित आयातों के बाजार हिस्से में लगभग 15 गुना वृद्धि हुई है। किंतु घरेलू उद्योग ने संबद्ध माल के बढ़े हुए निर्यात द्वारा घरेलू बाजार में मात्रा में अपनी हानि के हिस्से को पूरा करने का प्रयास किया है जिसमें इस अवधि के दौरान काफी वृद्धि हुई है। किंतु, पाटित आयात का बाजार हिस्सा 15% से भी कम रहा और संबद्ध माल के अन्य घरेलू उत्पादकों की मात्रा तथा बाजार हिस्से में सुधार दर्शाया गया है।

ज.4.1.2 एमबीटीएस

क) आयात मात्रा

85. आयात आंकड़ों के अनुसार एमबीटीएस के आयातों की मात्रा निम्नानुसार बैठती है:-

मात्रा मी.टन में

एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
पाटित आयात(चीन)	27	64	116	201
प्रवृत्ति	100	237	430	744
कुल आयात	62	82	119	209
प्रवृत्ति	100	133	194	340

86. उपरोक्त आंकड़े यह इंगित करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध माल के कुल आयातों तथा पाटित आयातों में क्षति जांच अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि रही है। संबद्ध माल से आयात मात्रा में वृद्धि कुल आयातों में हुई वृद्धि की तुलना में काफी अधिक रही। जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों का हिस्सा कुल आयातों के लगभग 98% रहा। इस प्रकार अन्य प्रतिस्पर्धियों को बाहर कर दिया।

ख) क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर प्रभाव:

87. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग पर आयातों के प्रभाव की जांच भी की है।

एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
क्षमता(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृति	100	122	161	161
उत्पादन(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृत	100	91	143	132
क्षमता उपयोग(%)	88.33	65.45	78.14	72.34

88. प्राधिकारी के संज्ञान में यह बात लाई गई कि घरेलू उद्योग ने वर्ष 2001-02 के दौरान अपेक्षतया अधिक क्षमता का लक्ष्य प्राप्त किया जो इस बात से स्पष्ट है कि यह क्षमता प्रक्रिया सुधार तथा उत्पादन में समयचक्र गिरावट के जरिए 900 मी.टन प्रति वर्ष से बढ़कर 1100 मी.टन प्रति वर्ष हो गई। किंतु बाजार मांग को देखते हुए क्षमता में वर्ष 2002-03 में और वृद्धि की गई जो बढ़कर एमबीटीएस की वास्तविक क्षमता 1100 मी.टन से 1450 मी.टन प्रति वर्ष हो गई। इस अवधि के दौरान मांग में लगभग 40% की वृद्धि हो गई। उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 32% की काफी वृद्धि रही हालांकि यह क्षमता वृद्धि के अनुरूप नहीं रही है। अतः क्षमता उपयोग में लगभग 15% की गिरावट रही है।

ग) बिक्रियों पर वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव

89. उपरोक्त उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग की बिक्रियों तथा बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:-

मात्रा: मी.टन				
एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियां	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	120	127	128

घरेलू उद्योग की कैप्टिव खपत	0	0	0	****
प्रवृत्ति				
घरेलू उद्योग का निर्यात	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	152	261	270
कुल बिक्रियां + घरेलू उद्योग की कैप्टिव खपत	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	128	161	164
अन्य बिक्रिया	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	103	110	122
कुल घरेलू बिक्रियां	925	1039	1102	1160
प्रवृत्ति	100	112	119	125
कुल आयात	62	82	119	209
प्रवृत्ति	100	133	194	340
मांग	987	1121	1221	1369
प्रवृत्ति	100	114	124	139
पाटित आयात	27	64	116	201
प्रवृत्ति	100	237	430	744
कुल आयात में पाटित आयातों का हिस्सा	43.89	78.13	97.38	96.1
मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
पाटित आयात	****	****	****	****
अन्य	****	****	****	****
सूचीकृत				
घरेलू उद्योग	100	106	103	92
पाटित आयात	100	209	347	536
अन्य	100	91	89	88

90. उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में 32% की वृद्धि रही है और घरेलू बाजार में उसकी बिक्रियों में 28% की वृद्धि दर्ज की गई है जबकि कुल घरेलू मांग में 40% की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग के पास अभी भी 25% से अधिक ऐसी अतिरिक्त क्षमता है जो घरेलू मांग को पूरा कर सकती है जिसे इस समय पाटित आयातों द्वारा पूरा किया जा रहा है। पाटित आयातों के फलस्वरूप भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग का हिस्सा लगभग 3% कम हो गया है। उत्पादन के एक हिस्से का उपयोग निर्यात बिक्रियों के लिए किया जाता है जिसे आधार वर्ष की तुलना में लगभग दुगुने से भी अधिक कर दिया गया है।
91. उपरोक्त जांच यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री तथा कुल बिक्री में समग्र रूप में वृद्धि हुई लेकिन मांग में वृद्धि के अनुरूप उनके बाजार हिस्से में लगभग 4% की मामूली गिरावट आई है और क्षमता उपयोग में लगभग 15% की गिरावट आई है हालांकि निर्यात उत्पादन के लिए इस क्षमता के उपयोग करने के वास्ते घरेलू उद्योग ने प्रयास भी किए हैं जिसमें समग्र रूप से काफी वृद्धि हुई है। किंतु, घरेलू उद्योग की बिक्रियों की मात्रा पर पाटित आयातों के वास्तविक तथा संभावित प्रभाव घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों की अच्छी मांग तथा वृद्धि के चलते मामूली रहा है। किन्तु, घरेलू उद्योग की बिक्री-मात्रा पर पाटित आयातों का वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव घरेलू उद्योग की अच्छी मांग तथा घरेलू बिक्रियों में वृद्धि के चलते मामूली रहा है।

ज.4.1.3 सीबीएस

क) आयात मात्रा

92. सीबीएस की आयात मात्रा आयात आंकड़ों के आधार पर निम्नानुसार बैठती है:-

	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
आयात मात्रा(मी.टन)				
सीबीएस				
पाटित आयात(चीन)	86	88	214	332
प्रवृत्ति	100	102	249	386
कुल आयात सीबीएस	203	145	287	426
प्रवृत्ति	100	71	141	209

93. उपरोक्त आंकड़े यह इंगित करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध माल के कुल आयात तथा पाटित आयात में क्षति जांच अवधि के दौरान लगभग 300% की वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से आयात मात्रा में वृद्धि कुल आयातों में वृद्धि की अपेक्षा काफी अधिक रही है। वास्तव में, पाटित आयातों का हिस्सा भारत में सीबीएस के कुल आयातों के लगभग 80% है।

ख) क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर प्रभाव:

94. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग पर आयातों के प्रभाव की जांच निम्नानुसार की गई है:-

सीबीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
क्षमता(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृति	100	100	110	110
उत्पादन(मी.टन)	***	***	***	***
सूचीकृत	100	104	113	110
क्षमता उपयोग(%)	90.0	93.20	92.64	89.9

95. प्राधिकारी के ध्यान में यह बात लाई गई कि सीबीएस के उत्पादन में 10% का मामूली क्षमता सुधार घरेलू उद्योग द्वारा वर्ष 2002-03 में किया गया जो बिना किसी पूंजी निवेश के ड्रायर के उत्पादन में सुधार द्वारा किया गया। उत्पादन में भी 10% सुधार किया गया और क्षमता उपयोग को 90% के स्तर पर कायम रखा गया।

ग) बिक्रियों पर वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव

96. घरेलू बिक्रियों की मात्रा तथा घरेलू बिक्रियों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग की बिक्रियों, मांग तथा बाजार हिस्से के अनुसार की गई है:-

सीबीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियां	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	118	138	129
घरेलू उद्योग की कैप्टिव खपत	0	0	0	0
प्रवृत्ति				
घरेलू उद्योग का निर्यात	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	147	120	119
कुल बिक्रियां +घरेलू उद्योग की कैप्टिव खप	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	126	132	126
अन्य बिक्रिया	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	106	93	96
कुल घरेलू बिक्रियां	1390	1539	1541	1520
प्रवृत्ति	100	111	111	109
कुल आयात	203	145	287	426
प्रवृत्ति	100	71	141	209
कुल घरेलू मांग	1593	1684	1828	1946
प्रवृत्ति	100	106	115	122
पाटित आयात	86	88	214	332
प्रवृत्ति	100	102	249	386
कुल आयात में पाटित आयातों का हिस्सा	42.31	60.72	74.53	77.99
मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
पाटित आयात	****	****	****	****
अन्य	****	****	****	****

सूचीकृत				
घरेलू उद्योग	100	111	120	106
पाटित आयात	100	97	217	316
अन्य	100	100	81	79

97. जहाँ तक सीबीएस का संबंध है, घरेलू बाजार में मांग में पर्याप्त वृद्धि (22%) रही और घरेलू उद्योग की बिक्रियों में भी समग्र मात्रा की दृष्टि से काफी वृद्धि (29%) दर्शाई गई है। ये आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को मामूली बाजार हिस्सा और मिल गया हालांकि पाटित आयातों का बाजार हिस्सा आधार वर्ष की तुलना में दोगुने से भी अधिक रहा। किंतु, ऐसा प्रतीत होता है कि पाटित आयातों से अद्यतन की तुलना में बाजार में अन्य सप्लायरों द्वारा खाली किया गया हिस्सा दसकितार हो गया है। अतः, घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा पर पाटित आयातों का कोई वास्तविक अथवा संभाव्य प्रभाव नहीं पड़ा है।

ज.4.2 पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

98. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वह इस बात पर विचार करें कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती हुई है अथवा यह भी कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमतों पर अन्यथा काफी मात्रा तक कोई प्रभाव पड़ा है अथवा उससे कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी मात्रा तक हो गई होगी।
99. इस संबंध में प्राधिकारी ने बिक्री कीमत, जिसमें टैक्स तथा शुल्क शामिल नहीं हैं, छूट, डिस्काउंट तथा कमीशन और भाड़ा तथा परिवहन पर विचार करने के बाद घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण किया है। आयातों की लैंडेड कीमत का निर्धारण भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार करके उसमें लैंडिंग प्रभार तथा लागू आधारिक सीमाशुल्क जोड़कर किया गया है। घरेलू उद्योग ने अपने प्रकटन पश्चात निवेदनों में जांच अवधि के लिए एनएसआर गणना में कतिपय त्रुटियों का उल्लेख किया है। तदनुसार, प्राधिकारी ने जांच अवधि के लिए एनएसआर की जांच करके उसमें संशोधन किया है और अलग-अलग उत्पादों पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव का विश्लेषण निम्नानुसार किया है:-

ज.4.2.1 एमबीटी

क) आयात कीमत में गिरावट

एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
लैंडेड मूल्य - चीन	94.70	97.05	94.40	82.98
सीआईएफ कीमत-चीन	69.45	71.18	71.9	65.73
लैंडेड कीमत में % गिरावट	-	-2.49	2.73	12.10

100. ये आंकड़े यह दर्शाते हैं कि चीन के सीआईएफ मूल्य में इसमें मामूली वृद्धि के बाद जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में काफी गिरावट आई है।

ख) कीमत कटौती और कम मूल्य पर बिक्री

एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
उद्योग की बिक्री पर सूची	***	****	****	****
सूचीकृत	100	100.59	115.14	114
एनआईपी				
बिक्री लागत	****	****	****	****
सूचीकृत	100	98	99	99
लैंडेड कीमत चीन	94.70	97.05	94.40	82.98
सूचीकृत	100	102	100	88
कीमत कटौती	****	****	****	****
कीमत कटौती(%)	****	****	****	10 से 20%

कम कीमत पर बिक्री				****
कम कीमत पर बिक्री (%)				10 से 20%

101. उपरोक्त जांच से इंगित होता है कि हालांकि घरेलू उद्योग के लिए विनिर्माण तथा बिक्री की इकाई लागत अधिकांशतः स्थिर रही है लेकिन प्रति इकाई बिक्री वसूली में लगभग 15% की वृद्धि हुई है। किंतु प्राधिकारी नोट करता है कि आधार वर्ष में बिक्री वसूली उत्पादन लागत से काफी कम रही। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि उन्होंने लागत को हासिल करने के लिए वास्तविक स्तर तक कीमत में वृद्धि करने का प्रयास किया है। लेकिन कीमत तथा इकाई बिक्री वसूली में यह वृद्धि बिक्री मात्रा तथा बाजार हिस्से में तीव्र गिरावट की लागत पर हुई प्रतीत होती है। हालांकि आयात कीमत के रुख से इंगित होता है कि आयात कीमतों में काफी गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है लेकिन घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में हुई वृद्धि से इंगित होता है कि पाटित आयातों के फलस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा है जिसका निर्णय उन अन्य कारकों द्वारा किया जा रहा है जो पाटित आयात कीमतों से संबंधित नहीं हैं।

ग) कीमत दबाव तथा मंदी

102. उपरोक्त सारणी से यह भी इंगित होता है कि कोई कीमत दबाव नहीं आया है। किंतु इससे यह भी इंगित होता है कि घरेलू उद्योग ने घरेलू बाजार में मात्रा लागत तथा बाजार हिस्से में संबद्ध माल की घरेलू बिक्रियों में प्रति यूनिट हानि को कम करने के उद्देश्य से अपनी कीमतों में वृद्धि की है।

ज.4.2.2 एमबीटीएस

क) आयात कीमत में गिरावट

रु०प्रति किग्रा.

एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
लैंडेड मूल्य	101.20	111.33	107.60	98.79
सीआईएफ कीमत	74.22	81.65	81.95	78.25

लैंडेड कीमत में % गिरावट	-	-10.01	-0.37	4.51
-----------------------------	---	--------	-------	------

103. उपरोक्त उत्पाद के संबंध में चीन से आयात की लैंडेड कीमतों तथा सीआईएफ कीमत में काफी वृद्धि दर्शाए जाने के बाद जांच अवधि के दौरान काफी गिरावट आई है।

ख) कीमत कटौती तथा कम मूल्य पर बिक्री

एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली	***	****	****	****
सूचीकृत	100	92	90	90
एनआईपी				****
बिक्री लागत	****	****	****	****
सूचीकृत	100	98	99	100
लैंडेड कीमत चीन	101.20	111.33	107.60	98.79
सूचीकृत	100	110	106	9
कीमत कटौती	****	****	****	****
कीमत कटौती (%)	****	****	****	10 से 20%
कम मूल्य पर बिक्री				****
कम मूल्य पर बिक्री (%)				10 से 20%

104. उपरोक्त जांच से इंगित होता है कि हालांकि विनिर्माण तथा बिक्री लागत लगभग स्थिर रही है लेकिन घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली क्षति अवधि के दौरान लगभग 9% कम हो गई। चीन से आयातों की लैंडेड कीमत आधार वर्ष की तुलना में केवल 2% कम हो गई किंतु यह पिछले वर्ष की तुलना में 8% कम हुई। कीमत कटौती तथा कम मूल्य पर बिक्री पर्याप्त मात्रा में रही।

ग) कीमत दबाव तथा मंदी

105. उपरोक्त सारणी से इंगित होता है कि घरेलू उद्योग ने अपने बाजार हिस्सा कायम रखने के उद्देश्य से अपनी कीमतों में गिरावट करके पाटित आयातों की आयात कीमतों में हुई गिरावट का प्रत्युत्तर दिया है।

ज.4.2.3 सीबीएस

क) आयात कीमत में गिरावट

रु0 प्रति किग्रा.

सीबीएस				
लैंडेड मूल्य - चीन	143.06	146.34	135.00	125.97
सीआईएफ कीमत-चीन	104.92	107.33	102.82	99.78
लैंडेड मूल्य में % गिरावट	-	-2.30	7.75	6.69

106. उपरोक्त उत्पाद के चीन से हुए आयातों की लैंडेड कीमतों तथा सीआईएफ कीमत में वृद्धि दर्शाने के बाद जांच अवधि के दौरान काफी गिरावट आई है।

ख) कीमत कटौती और कम मूल्य पर बिक्री

रु0 प्रति किग्रा.

सीबीएस				
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली	***	****	****	****
सूचीकृत	100	94	90	90
एनआईपी				****
बिक्री लागत	****	****	****	****
सूचीकृत	100	96	97	98

लैंडेड कीमत चीन	143.06	146.34	135.00	125.97
सूचीकृत	100	102	94	88
कीमत कटौती	****	****	****	****
कीमत कटौती(%)	****	****	****	15-25%
कम मूल्य पर बिक्री				****
कम मूल्य पर बिक्री(%)				5-15%

107. उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग की यूनिट बिक्री वसूली में 9% की गिरावट आई है जबकि विनिर्माण तथा बिक्री लागत में केवल 2% की गिरावट रही है। किंतु, इसी अवधि के दौरान आयात कीमत में भी 12% की गिरावट रही है। चीन से पाटित आयातों की वजह से पर्याप्त कीमत कटौती तथा कम मूल्य पर बिक्री की स्थिति बनी है। लेकिन घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अक्षतिकारी कीमत के आसपास ही रही है। जिसमें यह इंगित है कि पाटित आयातों से उसके घरेलू कार्यचालनों में हानि के रूप में वास्तव में क्षति का कारण होने की बजाय उसके लाभ मार्जिन में कटौती आई है।

ग) कीमत दबाव तथा मंदी

108. उपरोक्त सारणी से इंगित होता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतों में कमी करके पाटित आयातों की आयात कीमतों में आई गिरावट का प्रत्युत्तर दिया है। किंतु, घरेलू उद्योग के कीमत प्रत्युत्तर के परिणामस्वरूप भी उसकी घरेलू बिक्रियों तथा बाजार हिस्से में सुधार हुआ है।

ज.5 अन्य क्षति कारकों की जांच

109. कुछ क्षति कारकों जैसे क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग, वास्तविक एवं संभाव्य गिरावट पिछले भाग में आयातों की मात्रा में वास्तविक तथा संभाव्य वृद्धि, आदि की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने अन्य आवश्यक क्षति कारकों की जांच की है, जैसाकि नीचे बताया गया है:-

i) लाभ में वास्तविक और संभाव्य गिरावट

110. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बाजार में संबद्ध माल की बिक्रियों से प्राप्त लाभ निम्नानुसार रहे:-

लाभ	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
एमबीटी				
रु०/किग्रा.	(****)	(****)	****	****
सूचीकृत	(100)	(81)	24	21
एमबीटीएस				
रु०/किग्रा.	****	****	****	****
सूचीकृत	100	57	40	37
सीबीएस				
रु०/किग्रा.	****	****	****	****
सूचीकृत	100	85	65	62

111. यह देखा जाता है कि एमबीटी की घरेलू बिक्रियों की प्रति यूनिट लाभप्रदता में कीमतों में वृद्धि के कारण सुधार हुआ है। पिछले वर्ष की तुलना में जांच-अवधि के दौरान लाभप्रदता में केवल मामूली गिरावट रही है।

112. जहां तक एमबीटीएस का संबंध है, हालांकि घरेलू उद्योग को एक सकारात्मक लाभ मार्जिन प्राप्त होता है, लेकिन उसमें क्षति-अवधि में 60% से भी अधिक की गिरावट आई है। लाभप्रदता में यह गिरावट वास्तविक तथा काफी अधिक है।

113. सीबीएस के मामले में, प्रति यूनिट बिक्री वसूली अब भी विनिर्माण एवं बिक्री-लागत से ऊपर है और घरेलू उद्योग अब भी सकारात्मक लाभ मार्जिन कमा रहा है। लेकिन, क्षति-अवधि में प्रतियूनिट लाभप्रदता में काफी गिरावट आई है बावजूद इसके कि इस अवधि में घरेलू उद्योग को अपेक्षित अधिक उत्पादन तथा बिक्री-मात्रा का लक्ष्य हासिल हुआ है। किन्तु, आवेदक का इस उत्पाद पर यथोचित सकारात्मक आय अर्जित करते रहना जारी है।

ii) रोजगार तथा मजदूरियां

114. प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक एक बहु-उत्पाद कंपनी है जिसमें अनेक खड़ रसायन उत्पादों का उसी सुविधा के अंदर विनिर्माण होता है। किंतु, इस आवेदक ने अलग-अलग उत्पादों के संबंध में श्रम तथा मजदूरियों के आबंटन के संबंध में

जानकारी प्रस्तुत की है। इन विशेष उत्पादों का जहां तक संबंध है रोजगार तथा मजदूरियों में कोई बड़ा परिवर्तन संज्ञान में नहीं आया है। कंपनी द्वारा दी गई मजदूरियों तथा प्रति यूनिट उत्पादन मजदूरी यह दर्शाती है कि प्रति किग्रा. समग्र मजदूरी में अपेक्षतया अधिक श्रमिक उत्पादकता तथा अधिक उत्पादन की वजह से मामूली गिरावट आ गई है।

iii) नकद प्रवाह, लाभप्रदता और पूंजी निवेश पर आय

115. पूंजी निवेश पर प्राप्त आय की गणना प्रत्येक खड़ रसायन में नियोजित पूंजी और घरेलू बिक्रियों पर ब्याज पूर्व लाभ पर विचार किए जाने के पश्चात की गई है जोकि निम्नानुसार दर्शाई गई है:-

एमबीटी	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू बिक्रियों पर लगाई गई पूंजी	****	****	****	****
सूचीकृत	100	94	70	62
घरेलू बिक्रियों से लाभ	(****)	(****)	(****)	(****)
सूचीकृत	(100)	(93)	20	17
पूंजी निवेश पर आय	(****)%	(****)%	**** %	****%
सूचीकृत	(100)	(98)	28	27
घरेलू बिक्रियों से नकद लाभ	(****)	(36.83)	****	****
सूचीकृत	(100)	(95)	34	30
पूंजी निवेश पर आय	(****)%	(****)%	****%	****%
सूचीकृत	(100)	(101)	48	49

116. उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग ने एमबीटी की अपनी घरेलू बिक्रियों में पूंजी निवेश पर आय और नकद प्रवाह में सुधार मात्रा तथा बाजार हिस्से में हानि के बावजूद दर्शाया है।

एमबीटीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू बिक्रियों पर लगाई गई पूंजी(लाख रु.)	****	****	****	****
सूचीकृत	100	102	93	86
घरेलू बिक्रियों से लाभ(लाख रु0 में)	****	****	****	****
सूचीकृत	100	68	51	47
लगाई गई पूंजी पर आय	**** %	****%	**** %	****%
सूचीकृत	100	67	55	55
घरेलू बिक्रियों से नकद लाभ	****	****	****	****
सूचीकृत	100	74	56	54
लगाई गई पूंजी पर आय	****%	****%	****%	****%
सूचीकृत	100	73	61	62

117. जहां तक एमबीटीएस का संबंध है नकद प्रवाह, लाभप्रदता और पूंजी निवेश पर आय में उत्पादन तथा बिक्रियों में हुई वृद्धि के बावजूद गिरावट आई है।

सीबीएस	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
घरेलू बिक्रियों पर लगाई गई पूंजी (लाख रु0)	****	****	****	****
सूचीकृत	100	102	109	97
घरेलू बिक्रियों से लाभ	****	****	****	****
सूचीकृत	100	100	89	80
लगाई गई पूंजी पर आ	**** %	****%	**** %	****%

सूचीकृत	100	98	82	82
घरेलू बिक्रियों से नकद लाभ	****	****	****	****
सूचीकृत	100	100	90	81
लगाई गई पूंजी पर आय	****%	****%	****%	****%
सूचीकृत	100	98	82	84

118. उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि नकद प्रवाह, लाभप्रदता तथा पूंजी निवेश पर आय की दर में मामूली गिरावट के बावजूद आवेदक के लिए सीबीएस एक लाभकारी कारोबार बना हुआ है।

iv) माल सूची

119. विचाराधीन उत्पादों की माल सूची की जांच यह दर्शाती है कि माल सूची स्तर में काफी सुधार हुआ है जैसाकि नीचे दर्शाया गया है:-

माल सूची	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
सीबीएस	100	130	75	65
एमबीटी	100	102	41	51
एमबीटीएस	100	108	84	68

120. किंतु, प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पादों का पर्याप्त निर्यात किया है। अतः विचाराधीन उत्पाद का माल सूची स्तर कोई सतत पैटर्न परिलक्षित नहीं करता है और वह निर्यात पोत-लदानों से प्रभावित है।

v) उत्पादकता

121. यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में काफी सुधार हुआ है जिससे प्रति यूनिट उत्पादन लागत को नियंत्रण में रखने में सहायता मिली है। उत्पादकता तथा उत्पादन में हानि की वजह से घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव संज्ञान में नहीं आया है।

vi) वृद्धि

122. उत्पादन एवं बिक्रियों तथा अन्य कारकों की जांच से इंगित होता है कि क्षमता, उत्पादन, बिक्रियों, उत्पादकता जैसे कारकों के रूप में घरेलू उद्योग की वृद्धि सकारात्मक रही है। किंतु, बाजार हिस्से के रूप में घरेलू उद्योग को एमबीटी तथा एमबीटीएस में नकारात्मक वृद्धि का अनुभव हुआ है जबकि सीबीएस के मामले में सकारात्मक वृद्धि दर्शाई गई है। लाभप्रदता की दृष्टि से एमबीटी के मामले में नकद प्रवाह तथा लाभप्रदता की दृष्टि से सकारात्मक वृद्धि दर्शाई गई है जबकि अन्य दो उत्पादों के मामले में इन कारकों में नकारात्मक वृद्धि दर्शाई गई है।

vii) नया पूंजी निवेश करने की सामर्थ्य

123. हालांकि घरेलू उद्योग ने प्रत्येक संबद्ध माल में नया पूंजी-निवेश किया है लेकिन प्राधिकारी नोट करता है कि क्षति अवधि के दौरान किए गए पूंजी-निवेश अधिक रहे हैं जो विगत लाभप्रदता तथा मांग तथा बाजार हिस्से में भावी संभावनाओं का एक द्योतक है।

ज.5 अक्षतिकारी कीमत और क्षति मार्जिन

124. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के विस्तृत विश्लेषण तथा संवीक्षा के पश्चात संबद्ध माल के लिए एक अक्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया जिसका प्राधिकारी द्वारा विधिवत् सत्यापन किया गया।
125. उत्पादन तथा उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित सभी संगत कारकों की लागत जानकारी जांच अवधि तथा उससे पिछले वर्षों के संबंध में निर्धारित प्रपत्र में मंगाई गई। घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध माल की वास्तविक उत्पादन लागत का उपयोग सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर अनुकूल उत्पादन लागत के निर्धारण के लिए किया गया है। घरेलू उद्योग के लिए अक्षतिकारी कीमत के निर्धारण में प्राधिकारी ने संबद्ध माल के उत्पादन में प्रयुक्त कच्चे माल की लागत, उसकी खपत, जनसुविधाओं अर्थात् विद्युत, जल आदि की लागत, ब्याज लागत, श्रम लागत, मूल्य ह्रास लागत तथा बिक्री तथा प्रशासनिक खर्चों सहित सभी संगत कारकों की विस्तार से जांच तथा विश्लेषण किया है। संयंत्र में किए गए पूंजी निवेश तथा क्षमता उपयोग जैसे कारकों की जांच लागत विश्लेषण में की गई है। इन सभी कारकों का निर्धारण आधरिक लेखा बहियों और उत्पादन तथा वित्तीय विवरणों के संदर्भ में किया गया है। घरेलू उद्योग के संबंध में अक्षतिकारी कीमत का निर्धारण याचिकाकर्ता द्वारा नियोजित पूंजी पर एक यथोचित लाभ-मार्जिन की

उत्पादन लागत को जोड़कर किया गया है। तदनुसार, घरेलू उद्योग के लिए भारित औसत अक्षतिकारी कीमत का निर्धारण प्राधिकारी द्वारा निम्नानुसार किया गया है:-

एमबीटी: ₹0 **** प्रति किग्रा.

एमबीटीएस: ₹0 **** प्रति किग्रा.

सीबीएस: ₹0 **** प्रति किग्रा.

126. इस प्रकार निर्धारित अक्षतिकारी कीमत की तुलना चीन से हुए आयात की लैंडेड कीमत से की गई है जिससे क्षति मार्जिन का निर्धारण किया जा सके और क्षति मार्जिन निम्नानुसार बैठता है:-

	एनआईपी	लैंडेड मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन%
एमबीटी	****	****	****	10 से 20%
एमबीटीएस	****	****	****	10 से 20%
सीबीएस	****	****	****	5 से 15%

127. लैंडेड मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से होने वाले आयातों के सीआईएफ मूल्य में सीमाशुल्क तथा 1% लैंडिंग प्रभार जोड़ दिए गए हैं।

ज.6 क्षति के संबंध में निष्कर्ष:

128. क्षतिकारकों की जांच तथा पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभावों की दृष्टि से कारणात्मक विश्लेषण को सारांश में नीचे दिया गया है:

एमबीटी

129. एमबीटी के संबंध में क्षति-कारकों की जांच से इंगित होता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्रियों, क्षमता उपयोग तथा बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में काफी गिरावट आई है जबकि पाटित आयातों में समग्र दृष्टि तथा कुल मांग की दृष्टि से काफी वृद्धि हुई है। लेकिन, कुल मांग में पाटित आयातों की मात्रा तथा कुल नाम में उसका हिस्सा अब भी कम है। जहां आयातों के लैंडेड मूल्य में गिरावट आई है और उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में स्थिरता रही है, वहां घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में वृद्धि हुई है और नकद प्रवाह, लाभप्रदता तथा पूंजी निवेश पर आय में काफी सुधार दर्शाया गया है। अतः बाजार हिस्सा तथा मात्रा में हानि पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत में वृद्धि की तुलना में कीमत वृद्धि से प्रत्यक्ष रूप से सह-संबद्ध है जो जांच अवधि को छोड़कर इन अवधियों में कमोवेश स्थिर रही है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि हालांकि

वर्ष 2000-01 तथा 2001-02 में किसी भी देश से संबद्ध माल का कोई भी अथवा कोई ज्यादा आयात नहीं हुआ है और आवेदक को काफी अच्छी बिक्री हुई थी लेकिन उन्हें इस उत्पाद के कारण काफी हानि हुई क्योंकि उत्पादन लागत अधिक रही है हालांकि क्षमता उपयोग लगभग 90% रहा। घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि उन्हें पिछली हानि अन्य उत्पादकों से घरेलू प्रतिस्पर्धा की वजह से हुई थी जो अब बाजार में नहीं रह गई है। प्राधिकारी नोट करता है कि अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा बिक्री अब भी काफी है और आवेदक देशी तथा विदेश दोनों से हुई प्रतिस्पर्धा के चलते अपनी कीमतों में वृद्धि कर सका है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि इस उत्पाद की संपूर्ण मात्रा पर बाहर से जॉब-वर्क किया गया है। अतः मात्रा संबंधी क्षति आवेदक घरेलू उद्योग की बजाए सहायक एकक को होती है। हालांकि आयात-कीमत के रुख से यह इंगित होता है कि आयात-कीमतों में काफी गिरावट आई है जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है, लेकिन घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से इंगित होता है कि पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा है जिसका निर्णय उन अन्य कारकों द्वारा होता है जो पाटित आयातों की कीमतों से संबंधित नहीं होते हैं।

130. उपरोक्त विश्लेषण को देखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष देता है कि हालांकि घरेलू उद्योग को मात्रा तथा बाजार हिस्से में हानि की दृष्टि से इस उत्पाद के संबंध में क्षति होती है लेकिन यह क्षति वास्तविक क्षति नहीं मानी जा सकती है।

एमबीटीएस

131. इस उत्पाद के संबंध में क्षति कारकों की जांच से इंगित होता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री तथा कुल बिक्री में समग्र दृष्टि से वृद्धि हुई है हालांकि मांग में वृद्धि की दृष्टि से घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में लगभग 4% की मामूली गिरावट आई है जिसे पाटित आयातों द्वारा दूर कर दिया गया है। क्षमता उपयोग में लगभग 15% की गिरावट आई है और घरेलू उद्योग ने इस क्षमता के हिस्से का उपयोग निर्यात उत्पादन के लिए किया है। हालांकि विनिर्माण तथा बिक्री लागत अधिकांशतः स्थिर रही है लेकिन घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। किंतु, पाटित आयातों में लैंडेड मूल्य में गिरावट आधार वर्ष की तुलना में मामूली है। इस आवेदक की लाभप्रदता में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है हालांकि बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है।

132. किंतु, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अक्षतिकारी कीमत के आसपास ही रही है और ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग एक यथोचित लाभ प्राप्त कर रहा है हालांकि लाभप्रदता में गिरावट दर्शाई जा रही है।

प्राधिकारी द्वारा जांचे गए अन्य क्षतिकारकों से ज्यादा क्षति दिखाई नहीं दे रही है । अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष देता है कि घरेलू उद्योग को क्षति के आशय के भीतर इस उत्पाद के संबंध में वास्तविक क्षति नहीं होती है ।

सीबीएस

133. इस उत्पाद के संबंध में क्षतिकारकों की जांच से इंगित होता है कि हालांकि पाटित आयातों की मात्रा में समग्र दृष्टि से वृद्धि हुई है और भारत में आयातों के संबंध में भी, लेकिन घरेलू उद्योग ने अपनी बिक्रियों, उत्पादन तथा बाजार हिस्से में सुधार किया है और उसके क्षमता उपयोग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है । किंतु, घरेलू उद्योग की यूनिट बिक्री वसूली में 100% की गिरावट आई है जबकि विनिर्माण तथा बिक्री लागत में 2% की गिरावट रही है । पाटित आयातों के प्रभाव से कोई भी कीमत दबाव तथा मंदी इस उत्पाद के संबंध में नहीं पाई गई । निवल बिक्री वसूली प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अक्षतिकारी कीमत से अधिक है और इस उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह तथा लाभप्रदता अच्छी है हालांकि उसमें गिरावट दर्शाई गई है । प्राधिकारी द्वारा जांचे गए अन्य क्षतिकारकों से कोई ज्यादा क्षति नहीं देती है । अतः प्राधिकारी निर्णय देता है कि घरेलू उद्योग को इस उत्पाद के संबंध में क्षति के आशय के भीतर वास्तविक क्षति नहीं होती है ।

ट. अन्य कारक तथा कारणात्मक संबंध

134. प्राधिकारी ने इच्छुक पक्षकारों के इन तर्कों को नोट किया है और उक्त करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार, घरेलू उद्योग को हुई हानि, यदि कोई हो, की जांच की है जोकि नीचे दिए गए हैं-

(क) **पाटन कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा मूल्य:** प्राधिकारी ने जांच में शामिल देशों और उन देशों जो इस जांच में शामिल नहीं हैं, सहित सभी देशों से हुए आयातों की मात्रा तथा मूल्य संबंधी आंकड़ों की जांच की है । अन्य देशों से हुए आयातों की मात्रा बहुत ही कम है और चीन से पाटित आयातों का हिस्सा भारत को संबद्ध माल के आयातों का 95% से भी अधिक है । अन्य देशों से आयात की कीमत चीन से हुए आयात की कीमत की अपेक्षा काफी ऊँची है । ऐसा भी प्रतीत होता है कि चीन से हुए पाटित आयातों की वजह से अन्य देशों को भी अपनी-अपनी कीमतें कम करने अथवा बाजार से बाहर होने पर बाध्य होना पड़ा है । किन्तु, इन देशों की कीमतें चीन की कीमतों की अपेक्षा ऊँची हैं और याचिकाकर्ता इन कीमतों के आधार पर बेंच मार्क नहीं किया जाता है । इस प्रकार, घरेलू उद्योग को क्षति अन्य देशों से हुए आयातों की वजह से नहीं हुई है ।

(ख) **मांग में कमी:** प्राधिकारी के पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार विचाराधीन उत्पाद की मांग में अच्छी वृद्धि दर्ज हुई है। इस प्रकार, मांग में कमी ऐसा संभावित कारण नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को हानि हुई हो।

(ग) **खपत के पैटर्न में परिवर्तन:** विचाराधीन उत्पाद संबंधी खपत के पैटर्न में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वास्तव में, मांग के पैटर्न में विचाराधीन उत्पाद के लिए अनुकूल खपत पैटर्न दिखाई देता है। अतः खपत के पैटर्न के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकी होगी।

(घ) **व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियाँ और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा:** प्राधिकारी को अन्य भारतीय उत्पादकों अथवा घरेलू भारतीय बाजार में इस माल की सप्लाई करने वाले अन्य प्रतिस्पर्धा विदेशी उत्पादकों द्वारा अपनायी गयी कोई ऐसी व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियाँ नहीं दिखाई दी हैं जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(ङ.) **प्रौद्योगिकी में विकास:** इन उत्पादों के उत्पादन संबंधी प्रौद्योगिकी में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः क्षति के लिए प्रौद्योगिकी विकास कोई कारक नहीं बनता है।

(च) **घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन:** प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में सुधार मुख्यतः उसकी क्षमताओं में सुधार और घरेलू बाजार में हुए अतिरिक्त उत्पादन को बेचने की उसकी अयोग्यता के कारण हुआ है। हालांकि घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि तो हुई है लेकिन घरेलू तथा निर्यात बाजार में उसकी कीमत तथा लाभप्रदता में गिरावट आई है। अतः क्षति, यदि कोई हो, घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग के निष्पादन के कारण नहीं हुई है।

(छ) **उत्पादकता:** घरेलू उद्योग की उत्पादकता में, जैसी कि प्रति मानवशक्ति की दृष्टि से मापी गई है, वृद्धि हुई है। इससे उत्पादन-लागत में गिरावट को सहायता मिली होती। किन्तु, याचिकाकर्ता के लाभ में काफी कमी आई है।

135. उपर्युक्त आवश्यक कारकों के अतिरिक्त, प्राधिकारी ने इच्छुक पक्षकारों के उन तर्कों की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग को क्षति एनओसीआईएल के पूर्ववर्ती पेट्रोकेमिकल डिवीजन द्वारा हुई क्षति के कारण हुई जिसका अब विविलयन कर दिया गया है। प्राधिकारी नोट करता है कि विविलयन प्रक्रिया अब लगभग पूरी हो गई है और इस जांच में पेट्रोकेमिकल यूनिट का कोई भी खर्चा रबड़ रसायन व्यवसाय का कोई कारण नहीं है।

136. जहां तक एमबीटी का संबंध है, प्राधिकारी नोट करता है कि बिक्रियों में गिरावट की दृष्टि से हुई क्षति का प्रत्यक्ष संबंध आवेदक को वर्ष 2002-03 के दौरान हुई कीमत वृद्धि से है। आवेदक द्वारा की गई बिक्रियों में गिरावट आयी है जबकि अन्य घरेलू उत्पादकों ने घरेलू बाजार में अपनी-अपनी बिक्रियों में वृद्धि की है। अतः यद्यपि पाटित आयातों के कारण घरेलू बाजार में आवेदक की बिक्रियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है किन्तु अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई बिक्री जैसे अन्य कारकों से भी घरेलू बिक्रियों तथा कीमतों पर काफी प्रभाव पड़ा है। अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि आवेदक को एमबीटी के मामले में क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है।
137. जहां तक एमबीटीएस का संबंध है, प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि आवेदक को इस उत्पाद में एक यथोचित लाभ का प्राप्त होना जारी है और लाभप्रदता तथा पूंजी निवेश पर आय की दृष्टि से घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक तथा पर्याप्त नहीं है।
138. जहां तक सीबीएस का संबंध है प्राधिकारी का निर्णय है कि आवेदक का इस उत्पाद के संबंध में एक यथोचित लाभ कमाते रहना जारी है और लाभप्रदता और पूंजी पर आय में गिरावट की दृष्टि से घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक एवं कोई ज्यादा नहीं है।

ठ. निष्कर्ष:

139. इच्छुक पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों तथा किए गए निवेदनों और प्राधिकारी के पास इच्छुक पक्षकारों के निवेदनों अथवा अन्यथा उपर्युक्त जांच-परिणामों में यथारिकार्ड किए गए अनुसार उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के पश्चात और पाटन तथा क्षति की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि:
- i). चीन से संबद्ध माल (एमबीटी, एमबीटीएस तथा सीबीएस) के आयात भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रहे हैं और इन अलग-अलग उत्पादों के संबंध में पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक हैं;
 - ii) चीन से एमबीटी तथा सीबीएस के पाटित आयात के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होती नहीं पायी गयी है; और
 - iii) किन्तु जहां तक एमबीटीएस का संबंध है, चीन से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ड. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे:

140. पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना होता है ताकि भारतीय बाजार में एक मुक्त तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय करने के फलस्वरूप संबद्ध देश से होने वाले आयातों को किसी प्रकार से भी रोका जा सकेगा और इसीलिए उससे उपभोक्ताओं को इन उत्पादों की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ढ. सिफारिशें

141. इस निष्कर्ष के बाद कि चीन से एमबीटीएस के आयात की वजह से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी नीचे दिए गए प्रकार तथा तरीके से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है।
142. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए अपेक्षतया कम शुल्क सुबंधी नियम को देखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन, दोनों में से जो भी कम हो, के बराबर राशि के निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है जिससे घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त किया जा सके। तदनुसार, चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एमबीटीएस के सभी आयातों पर नीचे दी गई शुल्क तालिका के कालम 9 में इंगित राशि के बराबर राशि का निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है जो केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी होने वाली अधिसूचना की तारीख से प्रभावी होगा।

शुल्क तालिका

क्र.स.	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद	माल का विवरण	विनिर्देशन	मूल देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	38.12 29..34 29.25	-वही-	शून्य	चीन जन.गण.	कोई	मै0 शांगडॉंग शांक्सियान केमिकल्स कं0 लि0	कोई	0.402	कि.ग्रा.	अम.डा.
2	-वही-	-वही-	शून्य	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	0.464	कि.ग्रा.	अम.डा.
3.	-वही-	-वही-	शून्य	कोई	कोई	कोई	कोई	0.464	कि.ग्रा.	अम.डा.

ण. अगली प्रक्रिया:

143. इस निर्धारण के फलस्वरूप जारी केन्द्रीय सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई भी अपील उक्त अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।
144. प्राधिकारी इसमें यथा अनुशंसित निश्चयात्मक उपायों को जारी रखे जाने, उनमें संशोधन अथवा उन्हें समाप्त किए जाने के संबंध में उपरोक्त अधिनियम के संगत प्रावधानों तथा इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर समीक्षा कर सकेगा। प्राधिकारी द्वारा किसी ऐसी समीक्षा हेतु किसी भी अनुरोध पर तब तक विचार नहीं किया जाएगा जब तक कि वह किसी इच्छुक पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निधारित समय-सारणी के भीतर दर्ज नहीं कराया जाता।

क्रिस्टी एल. फेर्नांडेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 6th July, 2005

Final Findings

Subject : Anti-Dumping Investigation concerning imports of certain Rubber Chemicals (MBT, MBTS and CBS), from People's Republic of China.

No. 14/9/2004-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. WHEREAS M/s National Organic Chemicals Industries Ltd. (herein after referred to as NOCIL or applicant) filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and Rules, alleging dumping of Certain Rubber Chemicals namely MBT, MBTS, CBS and PVI originating in or exported from the People Republic of China (herein after referred to as subject country) and requested for initiation of an investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods.

3. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner, i.e., M/s National Organic Chemicals Ltd. on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 7th July 2004 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the above goods originating in or exported from the subject country in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules to determine the existence, degree

and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. PROCEDURE

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority.

(i) The Designated Authority notified the Government of Republic of China in terms of Rule 5 (5) of the Rules and copies of initiation notifications dated 7th July, 2004 were sent to the Embassy of Peoples Republic of China in India, known exporters from the subject country, importers and the domestic industry as per the information available with it and requested them to file questionnaire responses and make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.

(ii) Copies of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry were made available to the known exporters and the Embassy of China PR in accordance with Rules 6(3) supra.

iii) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries/territories to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter was also sent to the Embassy of subject country along with a list of known exporters/ producers.

iv) The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information, to the known exporters from subject countries/territories in accordance with the rule 6(4):-

v) In response to the above notification the following exporters from China PR filed their questionnaire responses alongwith their Non-Market Economy questionnaire responses.

- a) M/s Nanjing Chemical Factory, China PR (CBS)
- b) M/s Shandong Shanxian Chemical Co. Ltd, China PR (MBT, MBTS, CBS, and PVI)
- c) M/s Shanxian Yanggu Ltd (PVI)

vi) Preliminary deficiencies noticed in the questionnaire response, including NME responses were communicated to the parties. The revised responses and clarifications filed by the exporters were taken on record.

vii) Questionnaires were sent to known importers and Consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4). While M/s MRF Ltd and M/s Birla Tyres Ltd filed their importer's questionnaire response on confidential basis Automotive Tyres Manufacturer's Association (ATMA), All India Rubber Industries Association and All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers filed only legal arguments during the course of the investigation.

Viii) The views of the all interested parties, including the exporters, importers and other interested parties, to the extent they are relevant, have been taken on record and examined by the Authority at appropriate places, without reproducing the comments of individual interested parties.

ix) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations;

x) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

xi) The Authority verified the data of the domestic industry and injury information submitted and optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;

xii) Authority conducted on the spot investigation and verification of the exporters responses to the extent possible in order to determine the normal value and export price in the country of export.

xiii) Vide letter dated 16th May 2005 the domestic industry withdrew its application for imposition of the antidumping duty on one of the products under consideration i.e. PVI. In accordance with Rule 14 (a) of the said Rules the Authority terminated the investigation as much as it covered the product PVI only and continued with the investigation in respect of other three products named i.e. MBT, MBTS and CBS (herein after referred as subject goods). The Authority notes that M/s Shanxian Yanggu Ltd filed its questionnaire response only in respect of PVI investigations against which has been terminated. Therefore, the submissions made by this exporter have been removed from the records of this proceeding.

xiv) The Authority issued disclosure statements on 15th June 2005 to all interested parties intimating the essential facts placed before it, which has formed the basis of the findings of the Authority. The comments of the interested parties, to the extent they are relevant, have been examined by the Authority in this finding.

xv) The Authority has examined the confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them. The information, which are by nature confidential, or which have been provided on a confidential basis by the interested parties alongwith non-confidential summary thereof have been treated confidential. *** in this Notification represents information furnished by the petitioner on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xvi) Investigation was carried out for the period starting from 1st January 2003 to 31st December 2003 (POI).

B. PRODUCTS UNDER CONSIDERATION

4. The products under consideration are certain specific rubber chemicals used in manufacture of rubber products, namely: Accelerators: **MBT, MBTS, and CBS**

Detailed chemical names of the products are as follows:-

Generic Name	Chemical description	Other trade names
MBT	2-Mercapto Benzothiazole	Accelerator M,
MBTS	Dibenzothiazole disulphide	Accelerator DM
CBS	N-cyclohexyl-2-benzothiazole sulphenamide	Accelerator CZ/ Accelerator HBS

1. **MBT** - MBT is produced by reacting aniline, carbon disulphide and Sulphur under high temperature and pressure of Hydrogen Sulphide gas formed during the reaction.
2. **MBTS** - MBTS is manufactured by oxidation of sodium salt of MBT using suitable oxidizing agents.
3. **CBS** - CBS is manufactured by reacting sodium salt of MBT, Cyclohexyl amine using suitable oxidizing agents.
5. The products are mainly used in automotive tyre and tubes industry and also in conveyor belting and footwear industry amongst others. Other rubber chemicals used in various other uses are not covered within scope of the product under consideration.

B.1 Classification

6. The Authority notes that there is no dedicated ITC HS Classification for the subject goods and products under consideration are classified under various subheadings of customs classification heads 38.12.10, 38.12.20 and 38.12.30 as well as under 29.34.20 and 29.25.20 (at six digit levels) of the Customs Tariff Act and ITC HS classification. The Customs and ITC HS classifications are however, indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

B.2 Views of the Exporters, importers and other interested parties

7. The interested parties, including the responding exporters from China and the Automotive Tyre manufacturers Association, have argued that the Designated Authority should not have initiated a combined investigation covering four distinctive and separate rubber chemicals i.e. MBT, MBTS, CBS and PVI in a single investigation. They have argued that the Authority ought to have treated each of the four Rubber Chemicals separately as the markets, exporters, importers, producers and users may be different for each of these products. Therefore, taking them together would exclude meaningful cooperation from a number of parties in India, which would distort the facts. They have also argued that it is not possible to reach any determination on injury or volume/price effects without disaggregating the import data separately for each of the chemicals covered by the concerned tariff.

head. They have further argued that domestic industry has itself admitted that the four rubber chemicals are four different products which are not *inter se* substitutable. It was therefore incumbent upon the Designated Authority to initiate different investigations so that the dumping, injury and causal link analysis can be done in a meaningful way.

8. The domestic industry has argued that the subject goods are broadly used in treating rubber and rubber compounds and there is a great amount of commonality with regard to producers and consumers. Therefore, a common investigation was more appropriate than investigating all the products separately as long as all analysis are conducted separately for the products under consideration. They have further argued that there are past precedence where the Authority had investigated multiple products in a single investigation.

B.3 Examination by the Authority

9. The Authority notes that neither the Agreement nor the Antidumping Rules prohibits in any manner investigation of multiple products in one investigation. As long as the individual domestic products and the individual export products are like articles and the injury determination can be conducted against individual products there is no explicit restriction to limit the investigation to single product as has been argued by the interested parties.

10. The Authority further notes that the products under consideration in the present investigation, are three distinct yet same general category of rubber chemicals used as Accelerator Rubber Chemical, used in the rubber industry. The domestic industry is same for these rubber chemicals, which manufactures all these chemicals in the same manufacturing facilities. Therefore, initiation of a combined investigation was most ideal in this situation to optimize use of resources for such investigations.

11. The Authority also notes that the initiation notification has amply clarified that both dumping and injury investigations are to be carried out in respect of individual products in addition to overall impact examination on the domestic industry as a whole. The Authority also notes that the standing requirement of the domestic industry has also been examined with respect to individual products. Therefore, the arguments of the interested parties in this respect do not appear to be valid.

C. LIKE ARTICLES

12. The applicant has claimed that each individual product included in the application is a stand-alone product and does not have *inter se* substitutability with other rubber chemicals. These are specific chemicals used in specific recipe used for manufacture of different types of rubber products and cannot be substituted for other chemicals though they are generally known as accelerators and inhibitors. Moreover, the rubber chemicals included in the present application are also not *inter se* substitutable or *inter se* like products as these materials are used for specific end applications. Therefore, dumping margins and all other analysis, including injury to the domestic industry will be done on individual products.

13. These individual products are known by their chemical, as well as trade names world-over and there is no difference between the product manufactured by them and the import products. There is no difference in the products produced by the domestic industry and imported from subject country. The products are being directly imported by the tyre industry and also by traders for supply to other industries. The consumers are using the domestic and corresponding import products interchangeably.

14. The individual products produced by the domestic industry and imported from subject country are identical in all essential characteristics and therefore, like articles within the meaning of the term as per the Rules

D. DOMESTIC INDUSTRY

D.1 Views of the exporters, importers and other interested parties

15. The interested parties have argued that the standing of the domestic industry should have been examined vis-a vis the production by other Indian producers. They have argued that the Authority 'may' and not 'shall' exclude the producers having imports in their name or related to importers from the scope of domestic industry. Hence, the Authority must first decide whether it will include or exclude producers, who may also be importers, from the scope of domestic industry. It is only then that the domestic industry standing of NOCIL may be determined. They have also questioned the statement of the domestic industry that the other producers of the subject goods have either stopped production or turned traders. The domestic industry has argued that these producers have substantially exited from the production of the subject goods and resorted to imports.

16. ATMA and the responding exporters from China in their post disclosure submissions have reiterated their views on the standing of the domestic industry and have argued that since entire production of MBT has been outsourced from its ancillary unit, which has a separate legal entity, the applicant cannot be treated as the producer of the subject goods and therefore, cannot be regarded as the domestic industry in terms of the Indian Antidumping Rules.

D.2 Examination by the Authority

17. The application for the investigation has been filed by M/s. NOCIL, Mumbai. M/s Bayer India Ltd., M/s ICI Ltd. and M/s Merchem Ltd. are the other manufacturers of some of these products under consideration. However, it has been argued by the domestic industry that all of them have either ceased to produce the subject goods because of the dumped imports and turned themselves into importer of the subject goods, or substantially reduced their production. All the three companies were asked by the Authority to provide necessary information on their capacity, production sales and imports of the subject goods and also to confirm their support or opposition to the application. However, no response was received from these producers except from M/s ICICI who opposed the investigation.

18. However, transaction-wise import data provided by DGCI&S and other sources show that ICI and other two companies have substantial imports of these products during the period of investigation. As far as Bayer India is concerned, the

Company is related to M/s Bayer GmbH, a major producer and exporter of the subject goods to India from its manufacturing facilities located at different locations. However, to a specific request from the Authority seeking information from them and their support or opposition to the application, prior to initiation of the investigation, no response was received from these producers except ICICI. Therefore, the Authority concluded that there is no viable opposition to the investigation from any other domestic producers and in view of their importers status these domestic manufacturers do not qualify to be included in the domestic industry domain in terms of Article 4.1 (i) of the Agreement.

19. As far as the outsourcing of one of the product (MBT) is concerned, the Authority notes that the applicant gets one stage processing done from the ancillary unit on job-work basis for which NaMBT, the previous stage material is supplied by the applicant. The job-worker is paid a processing fee, which includes its costs, depreciation and profit. It is also noted that the entire capacity of the ancillary unit from which the applicant gets the MBT processed on job-work basis is fully dedicated to NOCIL. The Authority also notes that this practice of job working on long-term processing agreement basis is not uncommon in the processing industry world over. This practice is widely followed in the western countries by large producers of Rubber Chemicals like Flexys. The Authority also notes that the definition of domestic industry under Rule 2 (b) covers 'manufacturer of the like article' and 'any activity connected therewith'. Therefore, the Authority is of the view that partial processing done by the applicant on its intermediate product to final stage would not disqualify it to be regarded as the domestic industry.

20. ATMA and responding exporters from China have argued that the Authority should have collected information from other domestic producers for the purpose of injury examination. They have further argued that all the correspondence with other domestic producers should also be placed in the public folder. In this connection, the Authority notes that a detailed exercise has been undertaken to ascertain the standing of the applicant before initiation of the investigation and disclosed to the interested parties. Since other domestic producers did not cooperate, except brief information provided by ICI on confidential basis, Authority had no option but to proceed with best information available. As far as placing the correspondence of the Authority in the Public folder is concerned, the Authority notes that Rule 6(7) only obligates the Authority to make available the evidence presented to it by one interested party to other interested parties, participating in the investigation subject to the confidentiality requirements under Rule 7.

21. The applicant is a multi-product manufacturer of organic chemicals. The Authority notes that the plant capacity of the petitioner, for the individual products under consideration, is dedicated. Taking into consideration the production of the individual chemicals of the petitioner company and after disallowing the production of the producers who have substantial imports of respective products, the applicant company commands a major proportion of the total domestic production of the products under consideration. In view of the above the Authority holds that the applicant commands the standing and fulfils the requisite criteria to represent the domestic industry, as required under Rule 5(a) and (b) and Rule 2(b) of AD Rules.

E. De Minimis Limits

22. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources the imports of the individual products from the subject country are above the de minimis level.

F. Other submissions and issues raised

23. M/s Shanxian Chemicals has argued that determination of dumping can only be for the POI concerned and the Hon'ble Authority lacks jurisdiction in respect of any issues prior to the POI for dumping determination. They have argued that the data/information sought for the 2 prior years is to be used only for purposes of comparison with the POI and cannot be used or taken cognizance of in respect of the dumping margin determination during the POI. It has also been argued by the exporter that since the NME issue does not concern issues such as injury, causal link, public interest, standing, like article etc., but concerns only the information on the basis of which dumping margins are to be determined it is clear that even in the absence of any explicit restrictive language, the NME issue can only be looked at with respect to ascertaining the status during the POI and not earlier to enable determination of the dumping margin. They have argued that there can be no concern of status prior to the POI.

24. The issue raised by the interested parties has been examined by the Authority. As far as over lapping periods are concerned the POI has been taken as one calendar year in order to keep the POI as close as possible to the time of initiation without being affected by availability of data. Since the data of 12-month periods are being examined a three-month overlap of the last year would not significantly distort the data. However, the Injury investigation period usually extends two to three financial years prior to the POI to examine the trend of various parameters and indices that may indicate injury to the domestic industry.

25. As far as the dumping determination and status of the exporters for determination of NME issues are concerned, the interested parties have argued that the Authority has no jurisdiction to look at the status of the exporters and dumping prior to POI. While the Authority is not examining whether dumping existed prior to the POI, Para 8 (ii) of Annex I requires the Authority to examine whether the production cost and financial situation of such firms are subject to significant distortion carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write offs, barter trade and payment via compensation of debts. The Authority also notes that the responding exporters have been State-owned Enterprise for a long time before being privatized. They have also admitted in their submissions that China is an economy in transition and the exporters in question have also transformed themselves from state ownership to private ownership during the last few years. Therefore it is essential to examine the mechanism of transformation from state-owned enterprises to claimed privatization to understand whether the privatization process correctly reflects the true cost of assets and liabilities which in turn affect the cost of production and prices of the subject goods and whether the cost and prices of the exporter have been affected

by significant state interference in the commercial activities. Therefore, the Authority is of the view that arguments of the interested parties in this respect cannot be accepted.

G. DUMPING DETERMINATION

26. In response to the initiation of the investigation three responses were received from China i.e., M/s Nanjing Chemicals Ltd. (for CBS); M/s Shandong Shanxian Chemicals Ltd (for MBT, MBTS, CBS, PVI) and M/s Shandong Yanggu Ltd (for PVI). However, after termination of the investigation in respect of PVI, the proceedings against M/s Yanggu stands terminated. In view of the non-market economy presumption in respect of the Peoples Republic of China, the Authority examined the market economy claims by the individual exporters mentioned above. In this connection the Authority has examined whether these exporters are operating under market signals and their commercial operations are not affected by any significant state intervention.

G.1 Examination of Market Economy claims of responding exporters

G.1.1 M/s Shandong Shanxian Chemicals Co. Ltd

27. M/s Shandong Shanxian Chemicals Co. Ltd. made a claim for market economy treatment and accordingly filed a detailed submission in terms of para 7 & 8 of the Annexure-I of the Antidumping Rules. Additional information was also called for from the applicant on its claim of market economy status. The information submitted was also verified during the spot verification conducted by the Authority in China, to examine the claim of market economy status of the exporter. The result of verification was communicated to the exporter through a detailed verification report and comments thereof were also examined in the disclosure statement issued to the exporter. The Authority inter alia observed that the state-owned enterprise in the name of M/s Shanxian Organic Chemicals Factory was transformed into a joint stock Company in 1998-99 and the new enterprise was named M/s Shandong Sanxian Chemical Industry Co. Ltd. and transfer of assets and liability of the former enterprise took place through a complex process of various understandings between the parties.

28. The Authority also observed that the value at which the assets of the state-owned entity were transferred to the private ownership and the manner in which the liabilities have been adjusted or written off, distorts the cost of production of the products manufactured from this plant.

29. The exporter in its submissions has repeatedly argued that the scope of NME is limited to dumping margin determination and that the jurisdiction of the Hon'ble Authority is limited to the period of investigation (POI). Thus, determination of market economy treatment must necessarily be on the basis of the facts extant during the POI and not prior periods. They have further argued that neither domestic industry nor the Authority has cited any precedent in any leading jurisdiction for determination of NME during POI on the basis of status prior to the POI or events prior to the POI. They have argued that the scope of review of process and valuation is beyond the competence of the Hon'ble Authority.

30. Quoting Article 15 of the Protocol of Accession of China to WTO the exporter has inter alia argued that in determining price comparability under Article VI of the GATT 1994 and the Anti-Dumping Agreement, the importing WTO Member shall use either Chinese prices or costs for the industry under investigation or a methodology that is not based on a strict comparison with domestic prices or costs in China.

31. It has also been submitted that the rubber chemicals business sector in China has not been found to be operating under non-market economy conditions in any anti-dumping investigation in any other jurisdiction. It has been further submitted that these rubber chemicals have not been identified in the Annex 2A2 to the said Protocol as a business sector under state control or influence. Therefore, they have argued that there is, *prima facie*, no reasonable basis to assume that the said rubber chemicals business sector in China operates, as a NME and thus Shanxian should be excluded from being deemed to be operating under NME conditions.

32. They have further argued that against a public invitation to bid for the ~~exporter~~ company as a whole or any of its businesses only most of the present shareholders and management responded to the public notice and bid for the rubber chemicals business. Since the business had been operating at a loss for many years there were understandably no other bidders. As far as debt rescheduling and write offs are concerned the exporter has argued that debt re-scheduling including some write off is a common feature of privatization of loss making businesses in market economies and is believed to be the best practice in such privatizations as an option to winding up.

33. The Authority notes that Para 8 of Annex I of the Rules requires the Authority to ~~examine~~ whether the cost of production and prices of the subject goods in the ~~exporting~~ country are determined by the market signals are affected by significant state interference. The Authority also notes that allocation towards value of assets, and plant and machineries as well as the liabilities at the time of transfer of the entity from the Government control to private management ~~determines~~ the cost of the product.

34. Para 8 (3) (b) also requires the Authority to examine whether the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortion carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write offs, barter trade and payments via compensation of debts. Therefore, it is essential to examine the process of transformation and how the assets and liabilities of the entity have been valued for the purpose of the privatization. Hence the argument of the exporter that the Authority cannot look beyond the period of investigation to find the status and the process of privatization is not tenable.

35. In addition to the above examination of the process of transformation and its effects of the cost of production the Authority also examined the other parameters laid down in the Para 8 of Annex-I to the Rules to determine whether the decisions

of the exporter regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investments, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant state interference in this regard, whether costs of major input substantially reflects market value.

36. The exporter, in its post disclosure submissions, has reiterated its stand on the non-market economy issue. While admitting that valuation of assets is a one-time event and has a 'one time subsidy' effect the exporter has argued that this one time subsidy effect on account of the valuation will diminish with the passage of time.

37. The Authority has examined the arguments of the exporter and the parameters set out for determination of market economy status of the exporter and notes that the manner in which the process of privatization has taken place and the fixed and financial assets of the erstwhile SOE has been transferred to the new Company appears to have significantly affected the cost of the products under consideration. Therefore, the Authority is of the opinion that the production costs and financial situation of the exporter are subject to significant distortion carried over from the former non-market economy system therefore, prices in the domestic market do not reflect the correct price of the product for the purpose of determination of its normal value.

G.1.2 M/s Nanjing Chemical Factory

38. M/s Nanjing Chemical Factory (NCF) also filed a detailed questionnaire response and made a claim for market economy treatment. Accordingly the exporter filed a detailed submission in terms of para 7 & 8 of the Annexure-I of the Antidumping Rules. Additional information was also called for from the applicant on its claim of market economy status. The information submitted was also verified by the Authority during the spot verification conducted in China, to examine the issue of market economy status of the exporter.

39. The examination by the Authority indicates that the manufacturing facility i.e. Nanjing Chemical Plant has been transferred from a Government Department to another State-owned enterprise and therefore, remains a state-owned enterprise for all practical purposes. The legal entity of the Company is known as 'China Petrochemical Corporation Nanjing Chemicals Plant' (NCP) and as per the Business Licence of Enterprise Legal body dated 13th September 2000 it is State-owned enterprise. As it is today is a legal person as a wholly owned subsidiary of SINOPEC named in Annexure 2A2 to the Protocol of Accession of China to WTO. The entity is engaged in several activities including manufacture and sale of organic and inorganic chemicals. The status of the enterprise as a State-owned enterprise has also been admitted by the Company in its submissions.

40. The business entity is managed by a Board of Directors consisting of 5 members who are firstly elected by the congress of staff and workers, secondly appointed by SINOPEC. The Directors are required to act on behalf of the shareholder and related parties. It is however, noted that the State holds 100%

shares of the Company through SINOPEC. The company also claimed that neither SINOPEC nor related parties can intervene in the decisions of the directors of NCP concerning operational and financial decisions.

41. However, the exporter has have argued that in spite of the fact that they are a state-owned enterprise, the Authority is required to examine whether there is a substantial state interference in their commercial activities which affect the costs and prices of the goods under investigation. However, ownership and control by ownership are very vital elements of examination of the involvement of the owners in the commercial decision making process of the Company. The above examination indicates that the exporting entity remains under state control and considerable management control by the State through SINOPEC remains, in spite of the fact that the workers congress has a role in the selection of the management of the entity.

42. The Authority also examined the process of transfer to see whether the current costs and prices of the business entity is affected or influenced by the process of transfer, asset valuation and write off of liabilities etc. It was noticed that at the time of merger or transfer of NCP to SINOPEC, the assets, liabilities and the equities of NCP were recognized using 'pooling of interest' method with consolidated profits and losses not confirmed. It has been clarified by the exporter that the acquisition of NCP by SINOPEC was achieved through the use of equities. The combined assets of the merged entity were consolidated using book value, as opposed to the purchase method. The merging entities financial results were combined as though the two entities have always been a single entity. It was also confirmed that no proper revaluation of those assets, liabilities and equities were conducted at the time of transfer. It was clarified at the time of verification that the transfer was from one Government department to another government department. Therefore, the transfer was done on the basis of the book value at the time of transfer and no valuation of the assets and liabilities and equities was required.

43. The Authority notes that there was in fact no process of privatization of NCP. It still continues as a state-owned entity. However, through number of book adjustments and write offs carried out by the entity after its merger in SINOPEC, the entity has shown net profit in the POI, whereas it also has carried forward accumulated losses in its account. Therefore, the process of merger and allocation of various elements of costs effected through various adjustments and write offs carried out seems to have significant distorting effect on the cost of production and prices of the products.

44. In addition to the above examination of the process of transformation and its effects of the cost of production the Authority also examined the other parameters laid down in the Para 8 of Annex-I to the Rules to determine whether the decisions of the exporter regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investments, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant state interference in this regard, whether costs of major input substantially reflects market value.

45. The Authority examined the process of procurement of raw materials, and state intervention, if any, in the procurement process. The main raw material in the production of rubber chemicals is Benzenen which is procured from one of their related Companies i.e. M/s Shangdong Petrochemicals, a subsidiary of M/s SINOPEC, China. Verification was also conducted in the premises of M/s Shanghai Petrochemicals to examine whether the transactions between the related parties are at arms length.

46. The exporter has claimed that the transactions between Shanghai Petrochemicals and Nanjing Chemical Factory, are at arms-length and the price structure of the material are purely market based in spite of the fact that both are related parties through their common holding company. It was argued that the Company is responsible to its share holders and their interests and its overseas shareholders would not allow any kind of compensatory trade with any other company which would affect their profitability. The average price at which Benzene was procured from Shanghai Petrochemicals is RMB **** per MT. The Company claimed that weighted average price of benzene in the China open market was RMB **** per MT.

47. The Authority also examined the procurement of utilities, investment decisions, compensatory and barter trade, if any, application of bankruptcy and property laws and exchange rate conversion.

48. In its post disclosure submissions the exporter has reiterated that as a state-owned enterprise they are also an independent market entity in its operational and financial decisions and state-owned enterprise does not mean non-market economy. They have further argued that the cost of production remains undistorted through transfer to SINOPEC.

49. The Authority has examined all the arguments and facts before it and finds that the exporting entity continues to remain a fully state-owned enterprise and considerable state intervention in the management control, investments and cost and price decisions of the exporter exists; and the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortion carried over from the former non-market economy system. Therefore, the Authority holds that the costs and prices of the exporter cannot be accepted for determination of its normal value

G.2 Determination of Normal value

50. The Authority notes that the cooperating exporters from China have provided their domestic sales transaction details for the purpose of determination of normal value in the country of exports in respect of the products under consideration. However, in view of significant distortion in the cost and prices influenced by the process of privatization or merger of the exporters concerned, the Authority is of the opinion that carry over of significant distortions from the former non-market economy system in respect of these exporters cannot be ruled out and therefore, the costs and prices of the products in the domestic market are not determined by true market signals. Therefore, the Authority has constructed the normal values of the products in China PR in terms of para 7 of Annex-1 to the Rules.

51. Para 7 of the Annex-1 provides that

"in case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected in a reasonable manner [keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question] and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Account shall also be taken within time limits, where appropriate, of the investigation if any made in similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."

52. The interested parties, including the responding exporters and ATMA have argued that under the scheme of para 7, the normal value is required to be determined under the first set of methods i.e., based on the price or cost of production in an appropriate third country and the Authority can resort to second set of methods i.e. price paid or payable in India, only when it is not possible to determine the price under the first set of methods. In other words, the Designated Authority must exhaust the first method before moving to the alternative procedure. They have also argued that selection of appropriate third country should have been intimated to the exporters and their comments obtained before any determination of constructed normal value is made.

53. The exporters have further argued that India is an inappropriate choice as a surrogate economy since it does not have the raw materials, clustered development, capacities, and infrastructure; and logistics advantages/resources available to Chinese producers. They have argued that, the cost of production and exports in China is much lower than in India and India is not a comparable economy with China and thus an inappropriate choice for a surrogate economy.

54. The Authority has examined the above arguments of the interested parties with reference to the Rules quoted above and notes that sufficient reliable information on cost of production and prices of the subject goods in any comparable third country was not available for selection of an appropriate third country for determination of normal value. Therefore, it was not possible to use the first set of methods indicated by the interested parties. Neither the responding exporters, nor other interested parties have placed any reliable and verifiable information before the Authority, at the time of questionnaire response or subsequent submissions, for selection of an appropriate third country. On the other hand domestic industry's applications clearly indicated that the normal value construction done by them is based on the price paid or payable in India.

55. The Authority has, therefore, constructed the normal value based on the 'price paid or payable in India' duly adjusted for reasonable profit margin as the most reasonable method for determination of normal value in China in terms of para 7 of Annexure 1 of the Rules. Accordingly, the constructed normal values of the products under consideration has been determined as US\$**** Per Kg:

G.3 Export Prices

56. The cooperating exporters from China have submitted the details of their exports of the subject goods to India and the Authority has verified the data in respect of these exports including their claims of different adjustment to arrive at net-export prices. Accordingly, the export prices has been determined as follows:

G.3.1 M/s Shandong Shanxian Chemicals Ltd. China

MBT

57. The exporter exported *****MT of MBT to India during the POI at an average CIF price of US\$*****per MT. The export price has been adjusted towards, ocean freight, inland freight, insurance and handling charges as per the records of the exporter which works out to US\$ *****per MT. No Commission, rebate of discount was found payable on these transactions. Accordingly, the net ex-works export price is proposed to be determined as US\$ *****Per MT after allowing the adjustments as above.

MBTS

58. As far as MBTS is concerned the exporter exported *****MT of this product to India during the POI at an average CIF price of US\$ *****per MT. The export price has been adjusted towards, ocean freight, inland freight, insurance and handling charges as per the records of the exporter which works out to US\$ *****per MT. No Commission, rebate of discount was found payable on these transactions. Accordingly, the net ex-works export price is proposed to be determined as US\$ *****Per MT after allowing the adjustments as above.

CBS

59. The exporter exported *****MT of MBT to India during the POI at an average CIF price of US\$ *****per MT. The export price has been adjusted towards, ocean freight, inland freight, insurance and handling charges as per the records of the exporter which works out to US\$ *****per MT. No Commission, rebate of discount was found payable on these transactions. Accordingly, the net ex-works export price is proposed to be determined as US\$ *****Per MT after allowing the adjustments as above.

G.3.2 M/s Nanjing Chemicals

60. M/s Nanjing Chemicals filed its questionnaire response in respect of only one product i.e. CBS. The exporter has exported ***** MT of CBS to India during the POI

at an average CIF value of US\$ *****MT. The export price has been adjusted towards, Commission, ocean freight, inland freight, insurance and handling charges as per the records of the exporter which works out to US\$*****per MT. Accordingly, the net ex-works export price has been determined as US\$ *****Per MT after allowing the adjustments as above.

G.3.3 All other exporters from China

61. Net export prices of the non-cooperating exporters from China has been determined on the basis of lowest transaction value of cooperating exporters duly adjusted for level of trade adjustment based on facts available.

G.4 Dumping Margins

62. The weighted average net-export prices of individual products have been compared with the respective constructed normal values and the dumping margins proposed to be adopted works out as follows:

	Shanxian			Nanjing	All Other Exporters			
	MBT	MBTS	CBS	CBS	MBT	MBTS	CBS	
CNV Rs Per KG	*****	*****	*****	*****	*****	*****	*****	
EP Re per KG	*****	*****	*****	*****	*****	*****	*****	
Dumping Margin	*****	*****	*****	*****	*****	*****	*****	
Dumping Margin %	39%	32%	36%	32%	43%	37%	38%	

63. The dumping margin so determined have been found to be significant and above the de minimis levels.

H. INJURY AND CAUSAL LINK

64. Having determined that the subject goods from the subject country are entering the Indian market significantly below its normal value the Authority has examined the injury, if any, caused to the domestic industry as follows:

H.1 Views of the Exporters, Imports and other interested parties

65. The interested parties have argued that no injury has been suffered by NOCIL during the POI that can be attributed to alleged dumping by Chinese exporters. The arguments of the interested parties have been summaries *inter alia* as follows:

- That in its application itself NOCIL admits improvements in a number of key parameters like capacity, capacity utilization, sales and sales realization in respect of specific rubber chemicals;
- That the Petitioner has increased capacity though less than increase in demand;
- That Capacity utilization appears to have fallen marginally in POI for CBS and MBTS only and remained constant for MBT;

- That any decline in market share was due to low inventories and thus poor availability on demand for products and increase in exports;
- That cumulative decline in domestic profits is far less than the trend of decline in export profits; and similarly the cumulative profits trend for the Subject Goods is better than the overall profits trend for the Rubber Chemicals Division as a whole;
- That the Authority must evaluate not only 1 or 2 indices (like market share) but a number of *indicia* when considering whether or not there is any injury suffered by the domestic Industry;
- That many improvements are admitted and injury is only claimed in respect of market share, profits, cash flows and returns on investments. Any decline in market share was due to higher growth in demand than capacity, admittedly high exports, and admittedly low inventories leading to poor availability on demand for domestic market as most users have switched to just-in-time procurement. The alleged decline in profits, cash flows and returns are only in respect of MBT/MBTS and not in respect of CBS;
- That the injury appears to be due more to increased exports with poor sales realizations;
- That NOCIL's Annual Report up to September, 2003 indicates that the Rubber Chemicals Division is showing improvement and is expected to do well and problems are identified with the petrochemicals division that is proposed to shut down;
- That NOCIL has been able to borrow funds from the market, indicating no difficulty in raising capital and also no attributable injury.
- That since NOCIL, a multi-product company, has not filed product specific data for the other products, the injury analysis cannot be done as required on the basis of the subject goods vis-à-vis other products of NOCIL.
- That in case of allegations of threat of injury the Authority must exercise 'special care' and hold the Petitioner to a higher standard of proof than in the case of alleged material injury.
- That there is no volume effect of imports or the "volume effect" may be far less than alleged.
- That there is no "price effect" as no price suppression or price depression or price underselling or price undercutting has been shown.
- That the capacity for each of the individual rubber chemicals has consistently increased during the period of investigation but the investment in the plant and machinery of the domestic industry does not commensurate with the increase in capacity.
- That NOCIL cannot meet present demand let alone future demand.

66. In addition to the above the interested parties have argued that neither dumping nor injury is a sufficient condition for recommending levy of any anti-dumping duties. They have argued that Germany is also a possible exporter to India that may benefit more than NOCIL if any anti-dumping duty is levied. Export Prices from Germany (that is not included in the Subject Countries in the said Investigations) appears to be lower than the prices from China during the POI. Thus, they are likely to be causing injury if the higher priced imports from the

Subject Countries cause injury and their exports are likely to increase rather than NOCIL's sales increase in case of imposition of any anti-dumping duty on exporters from China. Thus an anti-dumping duty would serve only to deny market access to the exporters from China rather than remove any injury to NOCIL.

67. It has also been argued that increased exports at lower prices than in India during the POI also *prima facie* indicates an alternate cause of injury and absence of a causal link. NOCIL also closed own petrochemicals division and may have to absorb losses in the other divisions primarily due to unpaid debts of the petrochemicals particularly for costly naphtha and the retrenchment costs of workers and absorbing excess workers that were not retrenched.

H.2 View of the Domestic Industry

68. The domestic industry has contested the arguments of the interested parties that the domestic industry does not suffer any material injury on account of the dumped imports from China and injury if any, is due to factors other than the dumped imports. They have argued that in case of MBT increase in the prices by the domestic industry and decline in landed price of imports has directly resulted in decline in the sales volume and market share of the domestic industry. In case of MBTS and CBS the dumped imports have caused reduction in selling price of domestic industry in spite of rising costs; significant price undercutting; loss of market share and decline in profitability. Therefore, the domestic industry argues that there is a significant material injury caused to them due to the dumped imports from China.

69. In their post disclosure submissions the domestic industry has disputed the computation of Non-Injurious price and the net sales realization for the domestic industry on several grounds. The Authority has examined the claims of the domestic industry in this respect and errors in the computation have been rectified for the purpose of injury analysis.

H.3 Examination by the Authority

70. Having examined the degree and extent of dumping from China the Authority has examined the injury caused to the domestic industry, if any, and the causal link between the dumped imports and injury so suffered by the domestic industry. The Authority holds that the applicant Company i.e. NOCIL constitutes major proportion of Indian production of the subject goods during the period of investigation. Therefore, for the purpose of injury determination the applicant company has been held to constitute the domestic industry within the meaning of the Rules.

71. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, ".... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped

imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

72. The Authority notes that the investigation covers three distinct rubber chemicals used in the rubber industry. Therefore, for the purpose of injury determination also these products have been treated as three different and distinct products and injury caused to the domestic industry on account of individual products have been examined separately.

73. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules.

74. The arguments of the domestic industry regarding the determination of NIP and net sales realization has been examined by the Authority and to the extent the argument and computation methodology suggested was found acceptable, necessary corrections have been incorporated. Possible effect of de-merger of the petrochemical division has also been examined by the Authority while analyzing the effects of dumped imports on the performance of the domestic industry.

H.3.1 Comparison methodology adopted

75. The products under consideration i.e. MBT, MBTS, and CBS are three distinct products and are not *inter se* like products within the meaning of Rule 2(d). Therefore, Authority has assessed injury to the domestic industry individually for each of the subject rubber chemicals. The injury examination has been carried out considering data for the years 2000-01, 2001-02, 2002-03 and Jan-Dec 2003 (POI). The Authority notes that the domestic industry is found to be having significant export activities. However, for the purpose of the injury analysis the performance of the domestic industry has been assessed only in respect of domestic market and injury if, any caused to the domestic industry on account of its export performance has not been attributed to the dumped imports.

H.3.2 Import data and other issues

76. With regard to the volume of the dumped imports, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production and consumption in India.

77. Volume of imports for each of the subject rubber chemical from China has been analysed based on the data received from DGCIS and also reported in the secondary source (IBIS). The transaction-wise data reported IBIS for all Rubber Chemicals have been compared with DGCIS data for identifying individual products and compilation of data for the individual products. However, it is notice that either DGCIS data does not reflect correct description of the products or several entries are missing due to misclassification. While IBIS data reports only

imports through selected major ports, it shows higher volume of imports than the DGCIS data after pruning them for unrelated products. Therefore, for the purpose of the injury determination the data reported in IBIS has been relied upon and used after pruning the same for unrelated products to the extent possible.

H.4 Injury and Causal Links

78. The Authority has examined the mandatory injury parameters to determine whether the domestic industry suffers material injury. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under:-

H.4.1 Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market share

H.4.1.1 MBT

a) Import Volumes

79. On the basis of the examination the import data import volume of MBT works out as follows:

MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Dumped Imports (China)	9	21	138	155
Trend	100	233	1534	1722
Total Imports CBS	10	22	139	162
Trend	100	210	1347	1574

Qty in MT

80. The above data indicates that the dumped imports from China have increased substantially over the base year and the dumped imports constitute more than 95% of total imports of this product.

b) Effects on Capacity, Production and Capacity Utilization

81. The authority has also examined the effect of the imports on the capacity, production and capacity utilization of the domestic industry.

MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capacity (MT)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	107	121	129
Production (MT)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	78	71	76
Capacity utilization (%)	87.35	63.97	51.38	51.76

82. However, it has been brought to the notice of the Authority that the entire production of MBT is outsourced by NOCIL from its ancillary unit, under exclusive production agreement, for which all the raw materials, including the basic raw material NaMBT, are supplied by NOCIL and only processing is done by the processors on job-work basis. Therefore, the capacity indicated above is not the own capacity of the domestic industry though the capacity of the processor is

dedicated for NOCIL's production only. It has also been brought to the notice of the Authority that the capacity of the processor was limited by the dryer capacity and by improvement in dryer productivity the total capacity of this product has improved to **** MT during the POI without much capital investment. But the production has fallen drastically over the injury period in response to fall in sales volume in the domestic market. However, it has been argued by the interested parties that since the production capacity is not of the applicant, injury if any, due to fall in production and capacity utilization is not suffered by the applicant.

c) Actual and potential effect on sales:

83. The effect of dumped imports on the sales and market share of the domestic industry in respect of the above product has been analysed as follows:

				Qty in MT
MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Domestic Sales	*****	*****	*****	*****
Trend	100	114	83	79
Captive Consumption	*****	*****	*****	*****
Trend	100	90	80	75
Exports	*****	*****	*****	*****
Trend	100	128	151	282
Sales others	*****	*****	*****	*****
Trend	100	95	107	128
Total Domestic Sales	*****	*****	*****	*****
Trend	100	104	95	104
Imports	10	22	139	162
Trend	100	210	1347	1574
Total Domestic Demand	920	964	998	1093
Trend	100	105	108	119
Dumped Imports	9	21	138	155
Trend	100	233	1534	1722
Share of dumped imports in total imports	87	97	99	95
Market Share in Demand				
Domestic Industry	*****	*****	*****	*****
Dumped Imports	*****	*****	*****	*****
Others	*****	*****	*****	*****
Indexed				
Domestic Industry	100	109	77	66
Dumped Imports	100	223	1414	1451
Others	100	91	99	108

84. The above data shows that the domestic sales, as well as captive consumption of MBT, have fallen sharply, by about 21% over the injury period. The domestic industry's market share has also dropped by 34% compared to the base year while the market share of dumped imports has increased by about 15 times. However, of the domestic industry has tried to compensate part of its loss in volume in the home market by increased exports of the subject goods, which have increased substantially during this period. However, the dumped imports still

constitute less than 15% of the market share and volume as well as market share of other domestic producers of the subject goods have shown improvement.

H.4.1.2 MBTS

a) Import Volumes

85. As per the import data volume of imports of MBTS works out as follows:

Qty in MT

MBTS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Dumped Imports (China)	27	64	116	201
Trend	100	237	430	744
Total Imports	62	82	119	209
Trend	100	133	194	340

86. The above data indicates that total imports and dumped imports of the subject good from the subject country have increased substantially during the injury examination period. The growth in import volume from the subject country is significantly higher than the growth in total imports. During the POI the dumped imports constituted almost 98% of the total imports thereby displacing all other competitors.

b) Effects on Capacity, Production and Capacity Utilization

87. The authority has also examined the effect of the imports on the capacity, production and capacity utilization of the domestic industry.

MBTS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capacity (MT)	900	1100	1450	1450
Indexed	100	122	161	161
Production (MT)	900	1100	1450	1450
Indexed	100	91	143	132
Capacity utilization (%)	88.33	65.45	78.14	72.34

88. It was brought to the notice of the Authority that the domestic industry achieved higher capacity during 2001-02 from 900 MT per year to 1100 MT per year through process improvements and time cycle reduction in the production line. However, keeping in view the market demand capacity was added in 2002-03 to increase the actual capacity of MBTS from 1100 MT to 1450 MT per year. During this period the demand has gone up by about 40%. There is also a significant increase in production by about 32% compared to the base year, though not commensurate to the capacity increase. The capacity utilization therefore, has fallen by about 15%.

c. Actual and potential effect on sales:

89. The effect of dumped imports on the sales and market share of the domestic industry in respect of the above product has been analysed as follows:

Qty in MT

MBTS				
Domestic Sales of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	120	127	128
Captive Consumption of DI	0	0	0	0
Trend				
Exports of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	152	261	270
Total sales + Captive Cons of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	128	161	164
Sales others	*****	*****	*****	*****
Trend	100	103	110	122
Total Domestic Sales	925	1039	1102	1160
Trend	100	112	119	125
Total Imports	62	82	119	209
Trend	100	133	194	340
Demand	987	1121	1221	1369
Trend	100	114	124	139
Dumped Imports	27	64	116	201
Trend	100	237	430	744
Share of dumped imports in total imports	43.89	78.13	97.38	96.18
Market Share in Demand				
Domestic Industry	*****	*****	*****	*****
Dumped Imports	*****	*****	*****	*****
Others	*****	*****	*****	*****
Indexed				
Domestic Industry	100	106	103	92
Dumped Imports	100	209	347	536
Others	100	91	89	88

90. The above data shows that the production of the domestic industry has increased by 32% and its sales of in the domestic market has also registered a rise of 28% while the total domestic demand has gone up by about 40%. The domestic industry still has more than 25% spare capacity to meet the domestic demand, which is currently met by the dumped imports. Dumped imports have displaced the share of the domestic industry in the Indian market by about 3%. A part of the production has been utilized for export sales, which has more than doubled, compared to the base year.

91. The above examination shows that the production, domestic sale and total sales of domestic industry have increased in absolute term. But in relation to the rise in demand their market share has marginally declined by about 4% and the capacity utilization has fallen by about 15%, in spite of the efforts of the domestic industry to utilize this capacity for export production, which has increased significantly in absolute term. However, actual and potential effect of the dumped imports on the volume of sales of the domestic industry has been marginal on the face of healthy demand and growth of the domestic sales of the domestic industry.

H.4.1.3 CBS**a) Import Volumes**

92. The import data import volume of MBT works out as follows:

	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Import volumes (MT)				
CBS				
Dumped Imports (China)	86	88	214	332
Trend	100	102	249	386
Total Imports CBS	203	145	287	426
Trend	100	71	141	209

93. The above data indicates that total imports and dumped imports of the subject goods from the subject country have increased by about 300% during the injury examination period. The growth in import volume from the subject countries is significantly higher than the growth in total imports. In fact dumped imports account for about 80% of the total imports of CBS into India.

b) Effects on Capacity, Production and Capacity Utilization

94. The effect of the imports on the capacity, production and capacity utilization of the domestic Industry has been examined as follows:

CBS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capacity (MT)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	100	110	110
Production (MT)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	104	113	110
Capacity utilization (%)	90.0	93.20	92.64	89.9

95. It was brought to the notice of the Authority that the marginal capacity improvement of 10% in CBS production was achieved by the domestic industry during 2002-03 through improvement of the throughput of the dryer without any capital investment. The production has also improved by 10% retaining the capacity utilization at 90% level.

c) Actual and potential effect on sales:

96. The volume of domestic sales and effects of dumped imports on the domestic sales have been examined in terms of sales of the domestic industry, demands and market shares

Qty in MT

CBS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Domestic Sales of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	118	138	129
Captive Consumption of DI	0	0	0	0
Trend				

Exports of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	147	120	119
Total sales + Captive Cons of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	126	132	126
Sales others	*****	*****	*****	*****
Trend	100	106	93	96
Total Domestic Sales	1390	1539	1541	1520
Trend	100	111	111	109
Total Imports	203	145	287	426
Trend	100	71	141	209
Total Domestic Demand	1593	1684	1828	1946
Trend	100	106	115	122
Dumped Imports	86	88	214	332
Trend	100	102	249	386
Share of dumped imports in total imports	42.31	60.72	74.53	77.99
Market Share in Demand				
Domestic Industry	*****	*****	*****	*****
Dumped Imports	*****	*****	*****	*****
Others	*****	*****	*****	*****
Indexed				
Domestic Industry	100	111	120	106
Dumped Imports	100	97	217	316
Others	100	100	81	79

97. As far as CBS is concerned there is a substantial increase in the demand in the domestic market (22%) and the sales of the domestic industry also shows substantial increase in absolute volume terms (29%). The data also shows that the domestic industry has gained marginal market share though the market share of the dumped imports has more than doubled compared to the base year. However, the dumped imports appear to have cornered the space vacated by the other suppliers in the market than the applicant. Therefore, there is no actual or potential effect of dumped imports on the volume of sales of the domestic industry.

H.4.2 Price effect of dumped imports

98. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

99. In this connection the Authority has determined net sales realization of the domestic industry considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The domestic industry in its post disclosure submissions has pointed out certain discrepancy in the NSR calculation for the POI. Accordingly, the Authority has examined and revised the NSR for the

POI and the price effects of the dumped imports on individual products have been analysed as follows:

H.4.2.1 MBT

a) Decline in Import Price

MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Landed Value China ^a	94.70	97.05	94.40	82.98
CIF price China	69.45	71.18	71.9	65.73
% decline Landed price	-	-2.49	2.73	12.10

100. The data shows that the CIF value of imports from China after a marginal increase has shown a significant fall in the POI compared to the previous year.

b) Price undercutting and underselling

MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Net Sales Realisation of DI	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	100.59	115.14	114
NIP				*****
Cost of Sales	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	98	99	99
Landed Price China	94.70	97.05	94.40	82.98
Indexed	100	102	100	88
Price undercutting	*****	*****	*****	*****
Undercutting (%)	*****	*****	*****	10 to 20%
Price Underselling				*****
Underselling (%)				10 to 20%

101. The above examination indicates that while the unit cost to make and sell the product for the domestic industry remains almost constant, the sales realization per unit has increased by about 15%. However, the Authority notes that the sales realization in the base year was significantly below the cost of production. The domestic industry has argued that they have tried to increase the prices to the realistic level to recover the cost. However, this increase in prices and unit sales realization appears to be at the cost of drastic reduction in sales volume and market share. Though the trend of the import price indicates that the import prices have fallen substantially, thereby undercutting the prices of the domestic industry, the increase in the net sales realization of the domestic industry indicates that the dumped imports did not have significant effect on the prices of the domestic industry, which is being decided by other factors, not related to dumped import prices.

c) Price suppression and Depression

102. The above table also indicates that there is no price depression. However, it also indicates that the domestic industry has increased its prices in order to minimize per unit loss in the domestic sales of the subject good at the cost of volume and market share in the domestic market.

H.4.2.2 MBTS**a) Decline in Import Price****Rs per KG**

MBTS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Landed value	101.20	111.33	107.60	98.79
CIF price	74.22	81.65	81.95	78.25
% decline Landed price		-10.01	-0.37	4.51

103. The landed prices as well as CIF price of imports from China of the above product, after showing substantial increase, has shown significant fall during the POI

b) Price undercutting and underselling**Rs per KG**

MBTS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Net Sales Realisation of DI	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	92	90	90
NIP				*****
Cost of sales	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	98	99	100
Landed Price China	101.20	111.33	107.60	98.79
Indexed	100	110	106	98
undercutting	*****	*****	*****	*****
undercutting (%)	*****	*****	*****	10 to 20%
Underselling				*****
Underselling (%)				10 to 20%

104. The above examination indicates that though the cost to make and sale remains almost constant the sales realization of the domestic industry has declined by almost 9% during the injury period. Landed price of the imports from China has declined by only 2% over the base year but 8 % compared to the previous year. The price undercutting and underselling is significant.

c) Price suppression and Depression

105. The above table also indicates that the domestic industry has responded to the decline in imports prices of the dumped imports by reducing its prices in order to retain its market share.

H.4.2.3 CBS**a) Decline in Import Price****Rs per KG**

CBS				
Landed Value China	143.06	146.34	135.00	125.97
CIF price China	104.92	107.33	102.82	99.78
% decline Landed price	-	-2.30	7.75	6.69

106. The landed prices as well as CIF price of imports from China of the above product, after showing increase, has fallen significantly during the POI.

b) Price undercutting and underselling

Rs per KG

CBS				
Net Sales Realisation of DI	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	94	90	90
NIP				*****
Cost of Sales	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	96	97	98
Landed Price China	143.06	146.34	135.00	125.97
Indexed	100	102	94	88
undercutting	*****	*****	*****	*****
undercutting (%)	*****	*****	*****	15-25%
Underselling				*****
Underselling (%)				5 – 15%

107. The above data shows that the unit sales realization of the domestic industry has fallen by 9% while the cost to make and sale has fallen by only 2%. However, during the same period the import price has also fallen by 12%. There is a significant price undercutting and underselling by the dumped imports from China. But the sales realization of the domestic industry is close to the non-injurious price determined by the Authority indicating that the dumped imports have cut into its profit margin rather than actually causing injury in terms of loss in its domestic operations.

c) Price suppression and Depression

108. The above table also indicates that the domestic industry has responded to the decline in imports prices of the dumped imports by reducing its prices. However, the price response of the domestic industry has also resulted in improvement in its volume of domestic sales as well as market share.

H.5 Examination of other Injury factors

109. After examining some of the injury factors i.e. capacity, production and capacity utilization, actual and potential decline in sales and market share, actual and potential increase in volume of imports etc. in the pervious section the Authority has examined the other mandatory injury parameters as follows:

i) Actual and Potential decline in Profits

110. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows:-

Profits	2000-01	2001-02	2002-03	POI
MBT				
Rs/kg	(*****)	(*****)	*****	*****

Indexed	(100)	(61)	24	21
MBTS				
Rs/kg	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	57	40	37
M S				
Rs/kg	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	85	65	62

111. It is seen that per unit profitability of the domestic sales of MBT has improved due to increase in prices. There is only a marginal decline in profitability during the POI over the previous year.

112. As far as MBTS is concerned though the domestic industry realizes a positive profit margin the same has declined by over 60% over the injury period. The decline in profitability is material and significant.

113. In the case of BCS per unit sales realization is still above the cost to make and sale and the domestic industry is still having positive profit margin. But per unit profitability has declined substantially over the injury period in spite of higher production and sales volumes achieved by the domestic industry over this period. However, applicant continues to earn reasonable positive returns on this product.

ii) Employment and Wages

114. The Authority notes that the applicant is a multi-product company with several rubber chemical products manufactured within the same facility. However, the applicant has submitted information on allocation of labour and wages to individual products. No major change in employment and wages as far as these specific products are concerned was noticed. Wages paid by the company and incidence of wage per unit of production shows that overall wages per kg have reduced marginally due to higher labour productivity and higher production.

iii) Cash Flow, Profitability and Return on Investment

115. ROI has been calculated by considering capital employed in each rubber chemical and profit before interest on domestic sales, which shows as under:-

MBT	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capital Employed on domestic sales (Rs in lakhs)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	94	70	62
Profit from Domestic sales	(****)	(****)	*****	*****
Indexed	(100)	(93)	20	17
ROI	(****)%	(****)%	*****%	*****%
Indexed	(100)	(98)	28	27
Cash Profit from Domestic Sale	(****)	(36.83)	*****	*****
Indexed	(100)	(95)	34	30
ROI	(****)%	(****)%	*****%	*****%

Indexed	(100)	(101)	48	49
---------	-------	-------	----	----

116. The above data shows that the domestic industry has improved its cash flow and return on investment in its domestic sales of MBT, in spite of loss in volume and market share.

MBTS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capital Employed on domestic sales (Rs in Lakhs)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	102	93	86
Profit from Domestic sales	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	68	51	47
ROI	*****%	*****%	*****%	*****%
Indexed	100	67	55	55
Cash Profit from Domestic Sale	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	74	56	54
ROI	*****%	*****%	*****%	*****%
Indexed	100	73	61	62

117. As far as MBTS is concerned the cash flow, profitability and return on investment have declined in spite of increase in production and sales and the decline is significant and material.

CBS	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Capital Employed on domestic sales (Rs in Lakhs)	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	102	109	97
Profit from Domestic sales	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	100	89	80
ROI	*****%	*****%	*****%	*****%
Indexed	100	98	82	82
Cash Profit from Domestic Sale	*****	*****	*****	*****
Indexed	100	100	90	81
ROI	*****%	*****%	*****%	*****%
Indexed	100	98	82	84

118. The above data shows that CBS continues to be a profitable business for the applicant in spite of marginal decline in the cash flow, profitability and rate of return on investments made.

iv) Inventories

119. Examination of the inventory of the products under consideration shows significant improvement in the inventory level as follows:

Inventory	2000-01	2001-02	2002-03	POI
CBS	100	130	75	65
MBT	100	102	41	51
MBTS	100	108	84	68

120. However, the Authority also notes that the domestic industry has significant exports of the products under consideration. Inventory levels of the product under consideration are therefore not reflective of any consistent pattern and are influenced by export shipments.

v) Productivity

121. It may be seen that productivity of the domestic industry significantly improved, which has helped in keeping the unit cost of production under check. No adverse effect on the domestic industry on account of productivity or production loss could be noticed.

vi) Growth

122. The examination of the production and sales as well as other parameters indicate that the growth of the domestic industry in terms of parameters, such as capacity, production, sales, productivity have been positive. However, in terms of market share the domestic industry has experienced negative growth in MBT and MBTS, while CBS shows positive growth. In terms of profitability, MBT shows positive growth in terms of cash-flow and profitability whereas other two products have negative growth in these parameters.

vi) Ability to raise fresh investment

123. Even though the domestic industry has made fresh investments in each of the subject goods, the Authority notes that the investments made in the injury period are more an indicator of past profitability and future expectations of demand and market share.

H.5 Non-Injurious Price and Injury Margins

124. The authority determined a Non-injurious Price for the subject goods after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry, duly verified by the authority.

125. The cost information on all relevant factors concerning the production and the production process were called in the prescribed pro-forma for the period of investigation and for the preceding years. The actual cost of production of the subject goods for the domestic industry has been used to determine optimum cost of production on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP). In the determination of Non-injurious price for the domestic industry, the Authority has examined and analyzed, in detail, all the relevant factors including cost of raw materials used in the production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities viz. Power, water etc., interest cost, cost of labour, depreciation cost and selling and administrative expenses. The factors such as investments made in Plant and the capacity utilization have also been examined in the cost analysis. All these factors have been determined with reference to the basic books of accounts and production and financial statements. The Non-injurious price for the domestic industry has been determined by addition to the cost of production of a reasonable

profit margin on the capital employed by the petitioner. Accordingly, weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as follows:

MBT: Rs ***** per Kg
 MBTS: Rs ***** per Kg
 CBS: Rs ***** per Kg

126. The non-injurious price so determined has been compared with the landed price of imports from China to determine the injury margin and the injury margin works out as follows:

	NIP	Landed Value	Injury Margin	Injury Margin %
MBT	*****	*****	*****	10 to 20%
MBTS	*****	*****	*****	10 to 20%
CBS	*****	*****	*****	5 to 15%

127. For the purpose of determination of Landed value Customs duty and landing charge of 1% has been added to the CIF value of imports from the subject country.

I. Conclusion on Injury

128. The examination of Injury parameters and causal analysis in terms of volume and price effects of dumped imports have been summarized as follows:

MBT

129. The examination of injury parameters in respect of MBT indicate that production, sales and capacity utilization and market share of the domestic industry has significantly declined over the base year; while dumped imports in absolute term as well as in relation to total demand has significantly increased. But the volume of dumped imports and its share in the total demand is still low. While the landed value of imports have fallen and cost of production has remained constant compared to the base year, the net sales realization of the domestic industry has increased and cash flow, profitability and return on investment shows significant improvement. Therefore, loss of market share and volume is directly correlated to the price increase rather than increase in volume, or the price of dumped imports which remained more or less constant except for the POI. The Authority also notes that the even when there was no or insignificant import of the subject good from any country in 2000-01 and 2001-02; and the applicant had a very significant sale they had substantial loss on account of this product because the cost of production remained high even when the capacity utilization was about 90%. The domestic industry has submitted that the earlier loss was due to domestic competition from other producers, which have exited from the market now. Authority notes that sale by other domestic producers is still substantial and the applicant has been able to increase its prices on the face of competition both from within and outside the country. The Authority also notes that the entire quantity of this product has been job-worked from out side. Therefore, volume injury is caused to the ancillary unit

rather than the applicant domestic industry. Though the trend of the import price indicates that the import prices have fallen substantially, thereby undercutting the prices of the domestic industry, the increase in the net sales realization of the domestic industry indicates that the dumped imports did not have significant effect on the prices of the domestic industry, which is being decided by other factors, not related to dumped import prices.

130. In view of the above analysis the Authority concludes that though the domestic industry suffers injury in respect of this product in terms of loss of volume and market share, the injury cannot be treated as being caused by the dumped imports.

MBTS

131. Examination of the injury parameters in respect of this product indicates that production, domestic sale and total sales of domestic industry have increased in absolute term. However, in relation to the rise in demand the market share of Domestic industry has declined by about 4%, which has been cornered by the dumped imports. Capacity utilization has fallen by about 15% even when the domestic industry has tried to utilize a part of its capacity for export production. Though the cost to make and sale remains almost constant the sales realization of the domestic industry has significantly declined during the injury period keeping in pace with the decline in the landed value of dumped imports. The profitability of the applicant has declined compared to the base year though the volume of sales has gone up. Therefore, improvement in productivity has not resulted in improvement in financial terms due to drop in unit sales realization.

132. In view of the above the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury in terms of decline in capacity utilization, market share, profitability, cash flow and return investment.

CBS

133. Examination of the injury parameters in respect of this product indicates that though the volume of dumped imports has increased in absolute terms and also in relation to imports into India the domestic industry has improved its sales, production and market share and there is no adverse effect on the capacity utilization. However, unit sales realization of the domestic industry has fallen by 9% while the cost to make and sale has also fallen by 2%. No price suppression or depression effect of the dumped imports could be found in respect of this product. The net sales realization is above the Non-injurious Price determined by the Authority and cash flow, as well as profitability of the domestic industry in respect of this product remains good though there is a decline in the same. The other injury parameters examined by the Authority do not show significant injury. Therefore the Authority concludes that the domestic industry does not suffer material injury in respect of this product within the meaning of the term.

J. Other factors and Causal Link

134. The Authority has noted these arguments of the interested parties and examined injury if any, caused to the domestic industry due to other factors in terms of Article 3.5 of the Agreement as follows:

(a) Volume and value of imports not sold at dumping prices: - The Authority has examined the data on volume and value of imports from all countries, including countries under investigation and countries not under investigation. The volume of imports from other countries is very small and dumped imports from China constitute more than 95% of imports of the subject goods to India. Import price from other countries are significantly higher than the import price from China. It also appears that dumped imports from China have forced the other countries also to reduce their prices or to exit the market. However, prices from these countries are higher than Chinese prices, and petitioner's prices are not benchmarked on the basis of these prices. Thus, imports from other countries have not contributed to the injury to the domestic industry.

(b) Contraction in demand:- As per the information available with the Authority the demand for the products under consideration have registered healthy growth. Thus, contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry.

(c) Changes in the patterns of consumption:- The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. In fact the demand pattern shows a favourable consumption pattern for the products under consideration. Changes in the pattern of consumption could not have, therefore, contributed to the injury to the domestic industry.

(d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers: - The Authority did not find any trade restrictive practices followed by other Indian producers or other competing foreign producers supplying the goods in the domestic Indian market, which could have contributed to the injury to the domestic industry.

(e) Developments in technology:- Technology for production of the products has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.

(f) Export performance of the domestic industry:- The Authority notes that the export performance of the domestic industry in terms of export volumes have improved mainly due to improvement in its capacities and its inability to sell the additional production in the domestic market. While the export volumes of the domestic industry have increased, the price and profitability in the domestic and export market has been segregated. Therefore, injury, if any caused due to higher exports has not been attributed to the performance of the domestic industry in its domestic market.

export market has been segregated. Therefore, injury, if any caused due to higher exports has not been attributed to the performance of the domestic industry in its domestic market.

(g) Productivity:- Productivity of the domestic industry, as measured in terms of production per manpower has increased. This should have helped in reduction in cost of production. However, the profits of the petitioner have significantly declined.

135. In addition to the above mandatory factors the Authority has also examined the arguments of the interested parties that the injury caused to the domestic industry is due to the loss made by the erstwhile Petrochemical Division of NOCIL which has since de-merged. The Authority notes that the de-merger process is now almost complete and no expenses of the petrochemical unit have been attributed to the Rubber Chemical business in this investigation.

136. As far as MBT is concerned, the Authority notes that the injury in terms of drop in volume of sales is directly related to the price increase effected by the applicant during 2002-03. The sales by the applicant have declined whereas other domestic producers have increased their sale in the domestic market. Therefore, though the dumped imports have affected the applicant's sale in the domestic market, other factors like sale by other domestic producers also have a significant effect on the domestic sales and prices. Therefore, the Authority concludes that the injury suffered by the applicant in respect of MBT is not caused by the dumped imports.

137. As far as MBTS is concerned, the injury suffered by the applicant in terms of decline in capacity utilization and market share, decline in sales realization and profitability, decline in cash flow and return on investment is significant and material and caused by significant price undercutting, underselling and depression effects of dumped imports from the subject country

138. As far as CBS is concerned, the Authority concludes that the applicant continues to get a reasonable profit in this product and the injury suffered by the domestic industry in terms of decline in profitability and return on investment is not material and significant.

J. Conclusion

139. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of dumping and injury the authority concludes that:

- i) Imports of the subject goods (MBT, MBTS, CBS) from China are entering the Indian market at dumped prices and the dumping margin in respect of the individual products are above de minimis level;

- ii) The dumped imports of MBT and CBS from China were not found to be causing material injury to the domestic industry.
- iii) However, as far as MBTS is concerned, the dumped imports from China have caused material injury to the domestic industry.

K. Indian industry's interest & other issues

140. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

L. Recommendation

141. Having concluded that import of MBTS from China has caused material injury to the domestic industry, the Authority recommends imposition of antidumping duty in the form and manner prescribed below.

142. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty equal to the amount indicated in Col 9 of the duty table is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of MBTS, originating in or exported from China PR.

Duty Table

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit of Measure	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)		
1	38.12. 29.34. 29.25.	-do-	NIL	China PR	Any	M/s Shandong Shanxian Chemicals Co Ltd.	Any	0.402	KG	US\$
2	-do-	-do-	NIL	China PR	Any	Any	Any	0.464	KG	US\$
3	-do-	-do-	NIL	Any	Any	Any	Any	0.464	KG	US\$

M. Further Procedures

143. An appeal against the order of the Central Government arising out of this determination shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

144. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time schedules stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority